श्री भैरव पद्मावती विधान

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार

आर्ष मार्ग संरक्षक, कविहृदय, प्रज्ञायोगी

दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

पुस्तक का नाम	:	**श्री भैरव पद्मावती विधान**
आशीर्वाद	:	**गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव** **वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव**
रचनाकार		**आर्षमार्ग संरक्षक प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव**
रचयित्री	:	**गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी** **आर्यिका आस्थाश्री माताजी**
विशेष सहयोग	:	**भट्टारक पट्टाचार्य श्री देवेन्द्र कीर्ति जी, श्री हुमचा तीर्थ** **मुनि श्री विमलगुप्तजी, मुनि श्री विनयगुप्तजी** **क्षुल्लक श्री धर्मगुप्तजी, क्षुल्लक श्री शांतिगुप्तजी** **क्षुल्लिका धन्यश्री माताजी, क्षुल्लिका तीर्थश्री माताजी** **ब्र. केशरबाई**
सर्वाधिकार सुरक्षित	:	**रचनाकाराधीन**
प्रतियाँ	:	1000
संस्करण	:	**प्रथम, द्वितीय-2020**
प्रकाशक	:	**श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, धर्मतीर्थ क्षेत्र कचनेर के पास, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)** Email : dharamrajshree@gmail.com

प्राप्ति स्थानः

1. प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ
2. श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 9421503332
3. श्री नितिन नखाते, नागपुर, 9422147288
4. श्री राजेश जैन (केबल वाले), नागपुर 9422816770
5. श्री रमणलाल साहू जी, औरंगाबाद मो. 9823182922
6. श्री सुबोध जैन, राधेपुरी, दिल्ली 9910582687

मुद्रक : **राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर** मो.नं. : 9829050791
E-mail : rajugraphicart@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृ.नं.
1.	आशीर्वाद	ग.गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी	4
2.	शुभाशीर्वाद	वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनन्दी जी	4
3.	शुभाशीर्वाद	प्रज्ञाश्रमण आचार्य देवनन्दी जी	5
4.	जयतु श्रुत देवता	आचार्य गुप्तिनंदी जी	6
5.	पद्मरूपा पद्मावती माता	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	8
6.	श्री भैरव पद्मावती विधान मंडल		11
7.	पद्मावती मण्डल पूजा विधान सामग्री		12
8.	संपत-शुक्रवार व्रत विधान कथा		13
9.	मंगलाष्टकम्		20
10.	विनय पाठ		22
11.	पूजा आरंभ (हिन्दी)		23
12.	श्री नित्यमह पूजा		27
13.	ऋद्धि मंत्र		31
14.	श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ पूजा		32
15.	श्री धरणेन्द्र यक्ष पूजा		38
16.	संपत् शुक्रवार व्रत पूजन		42
17.	श्री पद्मावती अभिषेक पूजा		47
18.	अद्भुत महामंत्र		49
19.	अथ पद्मावती माला मंत्र		50
20.	पद्मावतीदेवी अष्टोत्तरशतनाम बीजाक्षर मन्त्राः		52
21.	पद्मावती सहस्रनाम		54
22.	श्री भैरव पद्मावती विधान		69
23.	विधान प्रशस्ति		88
24.	अर्घावली		89
25.	समुच्चय अर्घ		91
26.	शांति पाठ, विसर्जन पाठ		92-93
27.	पद्मावती माता की आरती		94
28.	यक्ष-यक्षिणी की आरती		95
29.	पद्मावती माता का चालीसा		96
30.	साहित्य सूची		98

आशीर्वाद

आचार्य गुप्तिनंदी जी को प्रतिनमोस्तु एवं आर्यिका आस्थाश्री माताजी को समाधिरस्तु आशीर्वाद।

आपके संघ के द्वारा **'भैरव-पद्मावती विधान'** लिखा गया है सो बहुत अच्छी बात है, धार्मिक जन एवं पद्मावती भक्तजन इस विधान से लाभान्वित होंगे। आपने इस विधान को हिन्दी दोहा छन्दादि में लिखा है। इस विधान को संगीतमय करने से लोगों को बहुत लाभ मिलेगा। देवी भी प्रसन्न होकर भक्तों को आशीर्वाद देगी। मेरा भी आपको आशीर्वाद है।

- ग.ग. आचार्य कुन्थुसागर

शुभाशीर्वाद

श्रावक जन सर्वप्रथम तीनों लोकों के स्वामी श्री जिनेन्द्र भगवान का भक्ति भाव से 6 अंग सहित पूजा अभिषेक करें। भगवान के साथ ही जो 24 तीर्थंकरों के यक्ष-यक्षिणी क्षेत्रपाल आदि हैं। उनको भी यज्ञांश दान दें, उनका यथायोग्य सम्मान करें।

वे सब सम्मान के पात्र हैं।

आचार्य गुप्तिनंदी जी ने भैरव-पद्मावती विधान लिखा है। वह अद्वितीय है। उनकी रचना जन-जन का कल्याण करने वाली है। सभी भक्तों के दुःख संकट हरने वाली है।

प्रस्तुत कृति के रचनाकार मम प्रिय शिष्य आचार्य गुप्तिनंदी को प्रतिनमोऽस्तु सहित...

-आचार्य कनकनन्दी

सागवाड़ा (राज.), 16-5-2018

"श्री जिनाय नमः"

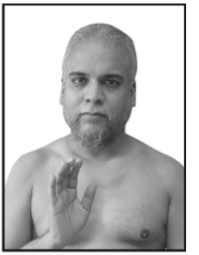

आचार्य श्री गुप्तिनन्दी जी महाराज की लेखनी से निःसृत रचनायें भारत वर्षीय दिगम्बर जैन समाज के लिये उपहार ही नहीं वरदान है।
आपकी रचनाओं में जैनागम का सार, पौराणिक, ऐतिहासिक, धार्मिक कथाओं का समावेश एवं कर्म सिद्धान्त, पुण्य - पाप के फल का स्पष्ट दर्शन मिलता है।
जब हम आपके द्वारा रचित पूजा-विधान का वर्णन पढ़ते हैं तब हमें आपकी निष्पक्षता पूर्वक आर्ष मार्ग से आप्लावित लेखनी का उल्लेख आपकी रचनाओं में प्राप्त होता है।
यह सम्पूर्ण जिनागम से स्पष्ट होता है कि जैन शासन के तीर्थंकर प्रभु तीन लोक के नाथ, साम्राज्य नायक, होने पर भी, पूर्ण वीतरागी हैं, फिर भी वीतरागी तीर्थंकर प्रभु के बहिरंग वैभव में अष्टप्रातिहार्य, सनत कुमार, सर्वाण्ह यक्ष, चौंसठ चंवर धारी यक्ष, सरस्वती, लक्ष्मी के साथ तीर्थंकर के तत्कालीन शासन देवी - देवता, यक्ष-यक्षिणी प्रभु के पार्श्व भाग में शास्त्रोक्त प्रमाण सहित ~~होते हैं~~ विराजमान होते हैं।

इन समस्त बहिरंग वैभव की पूजा के साथ वीतरागी प्रभु के पार्श्व भाग में विराजमान यक्ष यक्षिणी का सम समयोचित, सामयिक, सम्मान, यथोचित सत्कार, वस्त्राभरण पूज्य सामग्री से पूजा अर्चना अभिषेक पूर्वाचार्यों के आगमानुसार है, जैन शासन की महिमा को मण्डित करने वाले हैं।
अभी आपने "भैरव पद्मावती विधान" की रचना कर जैन शासन की सम्यक्त्व वर्द्धक क्रिया को पुष्ट किया है। इस विधान की रचना से जो जैन समाज के लोग जैनधर्म से बहिर्भूत मिथ्या कुदेवी कुदेवताओं के पूजा भक्ति करते थे उनसे दूर हटकर, मिथ्यात्व को छोड़कर, सम्यक्त्व वर्धक पट जिनायतनों का आश्रय लेकर सांसारिक कष्टों से मुक्ति पाकर, निराकुलता पूर्वक जैनधर्म का पालन करते हुये, मोक्षमार्ग को अपना सकेंगे।
श्री भैरव पद्मावती विधान से जन सामान्य भक्त श्रद्धालुओं को अपरिमित लाभ हो इसी सद्भावना से इस कृति की रचना की गई है। कृति के रचनाकार की छन्द बद्ध पूजा, पाठकों को भक्ति से भाव विभोर कर देती है।

धर्म तीर्थ के प्रणेता आचार्य श्री गुप्तिनन्दी जी महाराज द्वारा निर्माणाधीन तीर्थ का एवं अभिनव रचित गद्य - पद्य मय रचनाओं की उत्तरोत्तर अभिवृद्धि होती रहे, ऐसा हमारा आशीर्वाद है।

श्री क्षेत्र कचनेर जी.
५ जून २०१८.

भवदीय
प्रज्ञाश्रमण आचार्य देवनन्दि

जयतु श्रुत देवता

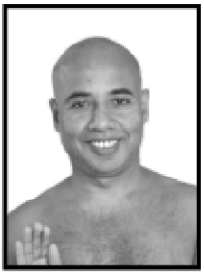

जो स्वयं तिरे और दूसरों को तारे उसे तारणहार या तरण तारण कहते हैं। जिनके आश्रय से तिरने वालों की संख्या गिनती में हो वे तो तारणहार हैं। परन्तु जिनके प्रबल निमित्त से संसार सागर से तिरने वालों की संख्या अनगिनत, असंख्य, अनंत हो तथा उनके मोक्ष गमन के पहले या बाद में भी युगों-युगों तक उनका नाम लेकर जीव सदा तिरते रहें उन्हें 'तीर्थंकर' भगवान कहते हैं। उनके जिनशासन की जो नित्य निस्वार्थ, निष्काम प्रभावना करते हैं। अपनी शक्ति से धर्मात्मा जीवों का संरक्षण करते हैं, जो निश्चित होते हैं, उन्हें जिनशासन प्रभावक, यक्ष-यक्षिणी कहते हैं। उन्हीं तीर्थंकरों में सर्वाधिक प्रसिद्ध तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान हैं। जो समता मूर्ति, संकटहर्त्ता हैं। आज भरत क्षेत्र के सर्वाधिक तीर्थ क्षेत्रों जिनालयों, गृह चैत्यालयों में तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमायें विराजमान हैं। वे जन-जन के आराध्य हैं। इसी प्रकार 24 तीर्थंकरों की 24 यक्षिणियों में 'श्री पद्मावती माता' सर्वाधिक विख्यात है। आज सारे विश्व में जहाँ-जहाँ श्री पार्श्वनाथ भगवान विराजमान हैं वहाँ-वहाँ पद्मावती माता भी विराजमान हैं। बल्कि अन्य तीर्थंकरों के मन्दिरों में भी पद्मावती माता का विशेष स्थान है। देवियों में श्री पद्मावती माता जैन समुदाय में जन-जन की आराध्या हैं। वे इतनी विख्यात क्यों हैं ? क्योंकि उन्होंने तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ का उपसर्ग मिटाया है। उपसर्ग के समय बड़ी निर्भीकता से उन्होंने पार्श्वनाथ भगवान को अपने मस्तक पर विराजमान किया और धरणेन्द्र यक्ष ने प्रभु पर अपना फण छत्र तान दिया। श्री धरणेन्द्र और पद्मावती को देखकर उनकी भीषण आवाज सुनकर दुष्ट कमठ अपनी माया समेटकर प्रभु चरणों में नतमस्तक हो गया। इस तरह प्रभु का उपसर्ग दूर हुआ। **तब से माता का नाम भैरव पद्मावती विख्यात हुआ।** इनके अलावा भी अनेकों आचार्यों, मुनिराजों का उपसर्ग पद्मावती माता ने दूर किया है। अनेकों सज्जन श्रावकों व सतियों की लाज माता ने बचायी है। अनेकों की सूनी गोद भरी है। हर प्रकार से अनेकों जीवों की रक्षा की है। समय-समय पर जिनशासन की प्रभावना करते हुए

अनेकों मन्दिरों व तीर्थों की रक्षा की है। इसलिये आज हुमचा, लाल मन्दिर दिल्ली, अणिन्दा, कुन्थुगिरी, उगार, बनारस, अहिक्षेत्र आदि अनेक स्थानों में पद्मावती माता की विशेष मान्यता है। बल्कि लाल मन्दिर दिल्ली का अनुसरण करते हुए दिल्ली के अधिकांश मंदिरों में पद्मावती माता की स्थापना की जाती है। बड़ौत, दिल्ली, रोहतक, मुजफ्फर नगर आदि अनेक शहरों में माता रानी के महा दरबार लगाकर विशेष जागरण किये जाते हैं। तो दक्षिण भारत में उनका विशेष महाश्रृंगार किया जाता है। मैंने भी 24 भुजा वाली अष्टधातु की पद्मावती माता की अति सुन्दर प्रतिमा बनवायी है। उनकी आराधना के लिए अत्यन्त सुन्दर चित्ताकर्षक प्रभावशाली **'श्री भैरव पद्मावती विधान'** बनाया है। श्री धर्मतीर्थ से श्री श्रवणबेलगोला गोम्मटेश बाहुबली मस्तकाभिषेक महायात्रा के दौरान जब हमारा संघ हुमचा तीर्थ पहुँचा। वहाँ सर्वप्रथम **'भैरव पद्मावती विधान'** किया गया। तब श्री हुमचा तीर्थ के **भट्टारक श्री देवेन्द्र कीर्ति स्वामी जी** ने हमें संस्कृत का **'भैरव पद्मावती विधान'** दिया और उसे हिन्दी में नये ढ़ंग से लिखने की प्रार्थना की। तद्नुसार इस विधान की रचना हुई है। श्रवणबेलगोला महायात्रा के अंतर्गत प्रतिदिन 25-30 किलोमीटर पैदल विहार करते हुए, अपनी श्रमण चर्या का पालन करते हुए मात्र 2 महिनों में सम्पूर्ण विधान की हुई।

यह विधान अत्यन्त सरल, सुगम, संक्षिप्त और रुचिकर है। विद्यार्थी, नवयुवक-नवयुवती, नव दम्पत्ति, महिला-पुरुष, निर्धन-धनवान, निसंतान, भूत-प्रेत की बाधाओं से पीड़ित, शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक रोगी आदि सभी जीवों के लिये लाभदायी है। तुरन्त फल प्रदायी है।

इस विधान से सबके सब कष्ट दूर हों, पाठक, पूजक, दर्शक, अर्थ सहयोगी, मुद्रक, प्रकाशक आदि सभी को हमारा आशीर्वाद है।

आचार्य गुप्तिनंदी

2-1-2018

आचार्य श्री भट्टाकलंक समाधि तीर्थ

सौंदामठ (कर्नाटक)

पद्मरूपा पद्मावती माता

दोहा– पद्मनेत्र पद्मावती, जिनशासन की शान।
माता तुम जिनभक्ति की, जग में है पहचान॥

मैं अपने आराध्य 24 तीर्थंकर भगवान को कोटि–कोटि प्रणाम करती हूँ। आदिनाथ, शांतिनाथ, चिंतामणि पारसनाथ, महावीर भगवान को नमन, वंदन करती हूँ। गणधर परमेष्ठी, जिनवाणी माता को नमन, वंदन करती हूँ।

पूज्य गुरुओं को नमन करती हूँ। आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी, गणाधिपति गणधराचार्य भारत गौरव वात्सल्य रत्नाकर मम दीक्षागुरु आचार्य श्री कुंथुसागर जी गुरुदेव को त्रयभक्तिपूर्वक नमोऽस्तु करती हूँ। मम दीक्षा शिक्षागुरु वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव को त्रयभक्तिपूर्वक नमोऽस्तु करती हूँ। मम शिक्षा, संस्कार, ज्ञान प्रदाता, परम पूज्य प्रज्ञायोगी कविहृदय महाकवि आर्षमार्ग संरक्षक आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव को त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु करती हूँ।

हमारे जैन धर्म के प्रचारक 24 तीर्थंकर भगवान हुये हैं। उन चौबीस भगवान के शासन यक्ष 24 हुये हैं। इसी तरह 24 यक्षिणी भी हुई हैं।

भगवान के समवशरण में इनका निश्चित स्थान है। ये सब भगवान के परम भक्त हैं, सम्यग्दृष्टि हैं।

24 यक्षिणियों में सबसे अधिक सम्मान महादेवी पद्मावती को दिया जाता है। जिस मंदिर में जो भगवान मूलनायक होते हैं, उनके शासन देवी–देवता की प्रतिमा तो बिठाई जाती है, परन्तु पद्मावती माता को भी उन मंदिरों में बिठाया जाता है।

पद्मावती माता के नाम से अनेक तीर्थ हैं जो बड़े ही अतिशयकारी हैं। जहाँ लाखों भक्त उनके दर्शन करने दूर–दूर से आते हैं। कर्नाटक क्षेत्र में एक प्रसिद्ध स्थान पद्मावती माता का है।

हुमचा जिसका नाम है, यहाँ श्रावक तो क्या साधु–संत भी इस तीर्थ पर

भगवान के दर्शन करने व देवी माँ को आशीर्वाद देने आते हैं। यह तीर्थ बहुत ही प्राचीन है। यहाँ पर कई आचार्यों ने चातुर्मास किये हैं। कितने ही आचार्यों ने मुनि दीक्षा, आर्यिका दीक्षा आदि दी हैं। हमारे दीक्षा गुरु गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव की मुनिदीक्षा भी यहाँ पर हुई है।

उगार पद्मावती कर्नाटक में है। यहाँ भी भक्तों की अपार भीड़ लगी रहती है। कश्मलगी में 108 भुजा वाली देवी पद्मावती विराजमान है। भारत के अनेक मंदिरों में देवी की भव्य प्रतिमा विराजमान है। समय-समय पर पद्मांबा अपना अतिशय दिखाती रहती हैं।

दिल्ली के लाल मंदिर में माता ने ऐसा चमत्कार दिखलाया कि अन्य मतावलंबी राजा को भी जैनधर्म को सम्मान देना पड़ा, झुकना पड़ा। इस प्रकार जिनायतन की रक्षा की। दक्षिण भारत से लेकर उत्तर भारत के अनेक मंदिरों में पद्मावती माता का बहुत भारी सम्मान किया जाता है।

दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा आदि स्थानों पर पद्मावती माता का बहुत बड़ा दरबार लगाया जाता है, चौकी बिठाई जाती है। उस दरबार में जैन जैनेत्तर सभी माता की भक्ति करने आते हैं। श्रद्धा से एक दीप अपनी तरफ से लगाते हैं, गोद भरते हैं और भक्ति करते हैं। इसलिए हमें भी रोज भगवान के अभिषेक के पूर्व भी देवी-देवता को अर्घ समर्पण करना चाहिये। प्रभु का अभिषेक पूजन होने के बाद भी पद्मावती, क्षेत्रपाल, यक्ष-यक्षिणी को यज्ञांश दान देना चाहिए।

मुनिराज, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिका उनको आशीर्वाद देते हैं। अन्य श्रावक गण, माता, बहनें, सम्मान करके हाथ जोड़कर जय जिनेन्द्र करते हैं।

पंचमकाल में हम इन यक्ष-यक्षिणी, क्षेत्रपाल आदि का सम्मान करेंगे तो ये हमें साथ देंगे। हमारे सभी भगवान तो सिद्ध शिला पे विराजमान हैं। जब कभी हमारे ऊपर संकट आता है तब हम भगवान को पुकारते हैं। उस संकट के समय ये यक्ष-यक्षिणी ही हमें दुःख, संकट से उबारते हैं। हमारा साथ देते हैं।

माता पद्मावती ने हमारे पार्श्वनाथ भगवान का उपसर्ग दूर किया। अपने मस्तक पर प्रभु को बिठाया और धरणेन्द्र देव ने प्रभु के ऊपर छत्र तान दिया। अनेक मुनियों, आर्यिकाओं के चतुर्विध संघ पे आये घोर उपसर्ग को दूर किया है।

माता ने अनेकों सतियों का शील बचाया है। सज्जन की रक्षा करने वाली माता का हर भक्त को हर शुक्रवार को गोद भरना चाहिये, सम्मान करना चाहिये। सम्मान करने से सम्मान मिलता है और गोद भरने से गोद भरती है। इसलिये उनका पूजा, विधान, मंत्र जाप आदि करना चाहिये। व्रत करना चाहिये।

अनेक नये तीर्थों पर पद्मावती माता के सुन्दर-सुन्दर मंदिर बन रहे हैं। **आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव की प्रेरणा से कचनेर क्षेत्र के पास 'धर्मतीर्थ'** बन रहा है। इस धर्मतीर्थ पर नवग्रह अरिष्ट निवारण करने वाली 8 अष्ट धातु की 9 प्रतिमायें नवग्रह शांति जिनालय में विराजमान हैं।

24 भुजा वाली अष्ट धातु की भैरव पद्मावती माता विराजमान है। अपने 24 हाथ से माँ सबको आशीर्वाद देती रहेगी। प्रश्न होता है कि पद्मावती में भैरव पद्मावती नाम क्यों है ? इसका उत्तर यह है कि श्री जिनसेनाचार्य के पार्श्वाभ्युदय महाकाव्य में और गुणभद्राचार्य के उत्तर पुराण अनुसार जब श्री पार्श्वनाथ भगवान पर दुष्ट कमठ ने महा उपसर्ग किया तब पद्मावती माता ने प्रभु को अपने सिर पर उठा लिया और अपनी सम्पूर्ण भुजा में अस्त्र-शस्त्र लेकर पूरी शक्ति से भीषण शब्द किया। भीषण आवाज को ही भैरव कहते हैं। भीषण - भै, आवाज शब्द+रव, भै+रव = भैरव। प्रभु रक्षा के लिए भीषण आवाज करने वाली पद्मावती भैरव पद्मावती कहलाती है।

माता की कृपा व वात्सल्य जिनको मिल जाता है। वह कभी दुःखी, गरीब, रोगी, निर्धन नहीं रह सकता। इस विधान में पूर्णार्घ समेत 75 अर्घ हैं।

यह विधान संसार के सभी भक्तों के काम आने वाला है। सभी इस विधान को हर शुक्रवार के दिन अवश्य करें। अपने दुःख संकट को मिटायें।

बुधवार पौष कृष्णा 11 के दिन भगवान चंद्रप्रभु और चिंतामणि पारसनाथ भगवान के जन्म व तप कल्याणक के दिन साजणी क्षेत्र पर 13-12-2017 को यह विधान प्रारम्भ किया और आज गुड़ी पड़वा को18-3-2018 को पूर्ण किया। इस पुस्तक के प्रकाशक, अर्थ सहयोगी, मुद्रक, दर्शक, पूजक, पाठक दान-दातारों को आशीर्वाद।

-आर्यिका आस्थाश्री

श्री भैरव पद्मावती विधान

मंडल

12 ॐ, 16 ह्रीं, 20 श्रीं, 24 क्लीं लिखें।

पद्मावती मण्डल पूजा विधान विधी
(साभार – पद्मावती विधान कुंथुगिरी)

पंचरंगों से नक्शे के अनुसार स्वच्छ धुला हुआ एक सुन्दर कपड़ा बिछाकर मंडल माँड दें। उस मण्डल वेदी पर पंच कलशों को पंचरंग (मौली) धागा बाँधकर नारियल फल रखें। उन कलशों को माण्डले के ऊपर सजाएँ। केले के स्तम्भ आशापाल के पत्तों का वन्दनवार लगाएँ, चँदोवा बाँधें और मण्डल को खूब सजाएँ। फिर मण्डल के आगे अभिषेक पीठ की स्थापना कर दें। यजमान धुले हुए वस्त्र पहनकर स्थापना पूर्वक पंचामृताभिषेक करें, शान्तिधारा करें, फिर अंगपोच्छन करके माँडले के ऊपर भगवान का स्थापन करें। भगवान के वाम भाग में एक टेबल लगाकर उस पर पद्मावती देवी की मूर्ति को सुन्दर–सुन्दर वस्त्राभूषणों से सजाएँ, षोडशाभरण पहनाएँ, पूजा प्रारम्भ करें। सकलीकरण, इन्द्रप्रतिष्ठा, मण्डल, वेदी शुद्धि, पंचकुमार पूजा, दशदिक्पाल पूजा, महर्षि उपासनादि करके नित्यमह पूजा करें। फिर पार्श्वनाथ पूजा करें, धरणेन्द्र पूजा करें, उसके बाद मण्डल विधान प्रारम्भ करें। पद्मावती पूजा करें। जो–जो समान वस्त्राभूषणादि लेकर आये हैं उन सबको पहले ही पहना दे। पूजा में नाम आने पर पुष्पांजलि क्षेपण कर दें।

विधान की सामग्री– 100 नारियल, 100 अर्घ की सामग्री, 5 कलश, 1–1 रुपये कलश में, 5 कलर की रंगोली 1–1 किलो, पंचामृत अभिषेक का समान, हरे फल केला, मौसंबी नैवेद्य आदि।

पद्मावती के श्रृंगार का सामान– साड़ी, 2 मीटर ब्लाउज के लिए, मुकुट, हार, चूड़ियाँ, कुण्डल, पायल, कंगन, जेवर का पूरा सैट, बड़ी माला, कुंकुम, काजल, बिन्दी, इत्र, दर्पण, तेल, चोला, गजरा, बिछिया, तिलक, भीगे चने आधा किलो, नौ प्रकार की 1–1 किलो मिठाई, आधा–आधा किलो नौ प्रकार की मेवा, नौ प्रकार के हरे फल, गन्ना (ईख), बिजौरा, नींबू, सुवर्ण कलश, 5 पान, 5 सुपारी, 100 इलायची आदि। देवी का पंचामृत अभिषेक करके खूब सजा दें। सुवर्णादिक आभरण आदि श्रृंगार का सभी सामान मँगवाएँ। अपनी शक्ति अनुसार जैसा ला सकें वैसा करें।

संपत-शुक्रवार व्रत विधान तथा कथा

मगध देश में राजगृह नगर के पास विपुलाचल पर्वत पर श्री महावीर स्वामी का समवसरण आने का समाचार महाराज श्रेणिक ने वनपाल के मुख से सुना और हर्षित होकर महारानी चेलना के साथ सपरिवार वहाँ पहुँचे। बड़ी भक्ति-भाव से जय-जयकार करके तीन प्रदक्षिणाएँ देकर श्री वीर प्रभु को त्रिबार नमोऽस्तु किया। बाद में बारह सभा के मनुष्यों के कोठे में बैठ गये। भगवान की दिव्य-ध्वनि श्री गौतम गणधर की वाणी द्वारा सुनकर राजा-रानी ने भक्ति-भाव से आनन्दित होकर विनती की कि हे भगवन्! संसार में दम्पति को अखण्ड सौभाग्य प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिये? इस विषय में कोई एक कथा हमको सुनाइए। तब भगवान के मुख से वाणी निकली, वह कथा इस प्रकार है :-

प्राचीन काल में सौराष्ट्र देश में परिभद्रपुरी नाम का एक नगर था। वहाँ का विकारमात्ता नाम का तेजस्वी, महापराक्रमी, न्यायी और धर्म व प्रजावत्सल राजा था। उसके बहुत रानियाँ थी। उनमें भूमि भुजादेवी पटरानी पतिव्रता, चतुर व कार्यकुशल थी और वह राजा को मंत्री की तरह सहायता देती थी। दोनों ने अपने राज्य में महती धर्म प्रभावना की। उनकी नगरी में श्रुणुयात नाम का एक दरिद्र व्यापारी था। उसकी पत्नी का नाम रूक्मावती था। उसकी जैन धर्म पर बहुत श्रद्धा भक्ति थी। पाप के डर से उससे कोई बुरे कार्य नहीं होते थे। घर में दरिद्रता के कारण वह दुःखी थी, इसलिए उसे किसी के पास जाकर बैठना बुरा लगता था और अपने घर में जो था उसी में संतुष्ट थी। अपनी बुरी स्थिति के कारण वह किसी से नहीं बोलती थी। अधिक संतान होने के कारण उनकी देख-भाल में उसका सारा दिन बीत जाता था। वह उनकी इच्छा पूर्ति व पालन-पोषण में असमर्थ थी। इस दुःख से छुटकारा पाने की रात-दिन उसे चिन्ता रहती थी। इससे उसका शरीर दुर्बल हो गया था। क्या करूँ, कहाँ जाऊँ उसे कुछ समझ में नहीं आता था। एक दिन पड़ौसी स्त्री ने उसे आकर समझाया। देखो आज भाग्य का दिन निकला है। गाँव के बाहर बगीचे में श्री विजयाभिनन्दन मुनिराज पधारे हैं, उनके दर्शनों के लिए गाँव के स्त्री व पुरुषों की भीड़ लग रही है। वे बहुत ज्ञानी हैं तथा भक्तों को हित का उपदेश देते हैं। सो अपन भी उनके दर्शनों का लाभ लेवें और इह लोक-परलोक के हित को साधकर सद्गति प्राप्त कर लें। इसलिए मैं तुझे बुलाने आई हूँ। तेरी इच्छा हो तो मेरे साथ चल। यह सुनकर रुक्मावती को अत्यन्त हर्ष हुआ। चिन्तित मन में शान्ति हुई। घरेलु दुःखों से छूटने का मार्ग मिले और शांतिसुख की प्राप्ति हो- इस भावना से वह उस स्त्री के साथ जाने को निकली। वहाँ पहुँच कर देखा कि क्या

ही चमत्कार है। दर्शनों की प्रतीक्षा में अपार जन–समुदाय श्री विजयाभिनन्दन मुनिराज के सामने जय–जयकार कर रहा है। विमान से पुष्प वृष्टि हो रही है। यह दृश्य देखकर रुक्मावती का मन प्रफुल्लित हो गया। उसने मुनीश्वर को विनयपूर्वक सादर नमस्कार किया और श्राविकाओं की सभा में जाकर बैठी। मुनीश्वर ने उपदेश प्रारम्भ किया। उसे सुनकर वह इतनी गद्‌गद् व प्रसन्न हुई कि अपने बाल बच्चों, घर–बार व संसार को भूल गई। मुनीश्वर ने अपनी अमृतवाणी से सात तत्त्वों का निरुपण किया। जीव तत्त्व का महत्त्व समझाया, अनादि संसार के सुख–दु:ख का वर्णन किया और जीवों के हित का मार्ग बतलाया। उन्होंने अखण्ड सौभाग्य बढ़ाने वाली व अत्यन्त सुख देने वाली संपत शुक्रवार व्रत की क्रिया बतलाई। वह क्रिया रुक्मावती ने ध्यानपूर्वक सुनी। वह क्रिया इस प्रकार थी–

विधान– श्रावण महीने में प्रत्येक शुक्रवार को उपवास अथवा एकासना करें, शक्ति अनुसार पूजा सामग्री साथ लेकर श्री जिन मन्दिर में जाकर दर्शन स्तुति, स्तोत्रादि द्वारा भगवान की पूजा भक्ति करें और धरणेन्द्र पद्मावती सहित श्री पार्श्वनाथ भगवान का पंचामृत अभिषेक पूजा करके श्री पद्मावती देवी की मूर्ति को दूसरे एक ऊँचे आसन पर विराजमान करें। नाना प्रकार के वस्त्रालंकारों से उनका श्रृंगार करें। दीप, धूप, फूलों के हार, केला के खम्भ इत्यादि साधनों से मंडप सजावें। हल्दी, कुंकुम, भीगे हुए चने आदि लेकर पंचोपचार पूजा करें। बाद में श्री पद्मावती महादेवी को मणि, मंगलसूत्र आदि आभूषण पहनावें। बाद में आटे के दो दीपक सहित जयमाला बोलकर तीन प्रदक्षिणाएँ देकर पूर्णार्घ चढ़ावें। फिर महादेवी की मंगल आरती करके शान्ति भक्तिपूर्वक विसर्जन करें। बाद में ध्यानपूर्वक शुक्रवार की व्रत कथा सुने। श्री पद्मावती देवी के सहस्रनाम के प्रत्येक बीजाक्षर मन्त्रों को बोलते हुए एक–एक चुटकी कुंकुम या लवंग पुष्प चढ़ावें, प्रत्येक शतक में अर्घ्य चढ़ावें, गंधोदक सिंचन करें और **''ॐ आं क्रौं ह्रीं ऐं क्लीं ह्रं सौं श्री पद्मावतीदेव्यै नम: मम सर्व विघ्नोपशांतिं कुरु–2 स्वाहा: ।''** इस मंत्र का लाल कनेर के फूलों से जाप्य करें। यदि कनेर के फूल उपलब्ध न हों तो गुलाब आदि के पुष्पों से जाप करें। आखिरी शुक्रवार को ऊपर कही हुई सारी क्रिया परिपूर्ण करके श्री पद्मावती माता को साडी पहनावें, षोडशालंकार से श्रृंगार करावें और नीचे लिखी सामग्री लेकर गोद भरे–

पाँच हरी चूडियाँ, पाँच हल्दी की गांठ, पाँच खोपरा, कुंकुम् के पाँच चोपड़े (डिब्बियाँ) स्त्रियाँ, पाँच नींबू, पाँच केले, पाँच छुहारे, पाँच मखाना, पताशा आदि इस प्रमाण लेकर उत्तम नारियल तथा चोली का वस्त्र लेकर गेहूँ या चावल से पाँच सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा गोद भरावें। गोद भरते वक्त अग्रिम श्लोक पढ़ें–

जय स्फटिक रूपद भामिनी, श्री पद्मावती अघहारिणी।
धरणेन्द्रराज कुलयक्षिणी, दीर्घ आयु आरोग्य रक्षिणी।।

उसके बाद अपने कुटुम्बीजनों को भीगे चने, हल्दी, कुंकुम, मखाना, पताशा, गुड़, खोपरा, पान, सुपारी इत्यादि गोद का प्रसाद बोलकर बांटें। एकत्रित सौभाग्यवती स्त्रियों को हल्दी कुंकुम लगावें। बाद में जय–जयकार करके मंगल गीत गाजे–बाजे के साथ घर वापस आवें। इस प्रकार पाँच वर्ष पर्यन्त यह व्रत विधिपूर्ण होने पर बाद में उद्यापन करें।

उद्यापन विधि–

पाँचकोनी कुम्भों की स्थापना करें, पाँच कलश स्थापित करें, पंचवर्णी रेशमी सूत बांधकर पाँचों कोणे तैयार करें। चारों दिशाओं में केले के खम्भ खड़े करें। खम्भों के पास दीपकों की रोशनी तथा हांडी गोल झाड़ आदि से सजावट करें, आटे के दीपक से आरती करें, चंवर ढुरावें, कुंकुम मिश्रित अक्षत एवं फूलों की वृष्टि करें। श्री पद्मावती देवी का विधान करें। पाँच पकवान के पाँच नैवेद्य अर्पण करें। पद्मावती देवी के समक्ष फूल और फूलों पर कुंकुम रख कर और मोती रखकर चढावें और सौभाग्यवती स्त्रियों को देवें। पाँच–पाँच मंगल वस्तुयें श्री जिन मन्दिर में चढ़ावें। आर्यिका को आहारदान तथा वस्त्रदान देवें। पाँच दम्पति को इच्छित भोजन करावें। यदि इस प्रकार से उद्यापन करने की शक्ति न हो तो दुगुणा व्रत करें। ऐसा करने से उद्यापन करने का फल मिलता है।

माँ, बाप, बहिन, भाई, नणद, देवर, जेठानी, सास, ससुर सबके आशीर्वाद से जीकर पति परमेश्वर का आखिर तक अच्छा सहवास मिले। सुसंतान सहित सुखी संसार बने, आनन्द से समय बीते, धन संतान की वृद्धि, लक्ष्मी की प्राप्ति, आरोग्यता, दीर्घायु एवं भूत पिशाचादि का भयनाश इत्यादि सुखों की प्राप्ति होकर चारों तरफ कीर्ति फैलती है। इस व्रत की महिमा अपरम्पार है। परन्तु श्री जिन धर्म पर एक निष्ठा भक्ति रखें। जीवनपर्यन्त श्री पद्मावती माताजी की सेवा नियमित रूप से करने की परम्परा से मोक्षमार्ग की सिद्धि होती है।

स्त्रियों के लिए कुमारी अवस्था में 'आत्म कुंकुम'' हल्दी और यौवनावस्था में 'सप्तकुंकुम' निश्चय से दुर्गति निवारक हैं। परन्तु इस जन्म में भी –

''कज्जलं कुंकुम काचं कबरी कर्णशेखरम्।
एवं पंच प्रकीर्त्यानि ककाराणि पुरन्ध्रीणाम्।।''

अर्थ– काजल, कुंकुम, काँच, चोटी व कर्णफूल ये सौभाग्यवती स्त्री के प्रसाधन कहे गये हैं। सौभाग्यवती कहलाने वाली महाभाग्यवती को ऊपर कहे पाँच ककार की जीवन के आखिर तक प्राप्ति होती है। अखण्ड सौभाग्यवती कहलाकर बड़े गौरव से उसका आयु पर्यन्त यश फैलता है। आत्म 'कुंकुम' और 'सप्तकुंकुम' इन व्रतों के महत्त्व का वर्णन श्री धरणेन्द्र देवराज की चंचल जिह्वा द्वारा भी किया जाना अति कठिन है, यह महा कल्याणकारी है। बरसाती तुच्छ नदी प्रवाह के समान क्षणभंगुर जीवन को निस्सार समझकर संसार बढ़ाना मूर्खता है। इस भवसागर से पार होने के लिए विचारशील व्यक्ति को यह व्रत कारणीय है। इसलिए महिलागण इस व्रत के पालन में अबला की तरह अति कोमल न हों।स्त्री जन्म को इसी भव में सार्थक कर लें; क्योंकि अगला जन्म उच्च कुल में होगा, ऐसा निश्चय से नहीं कहा जा सकता। इसलिए नर से नारायण बनने का यही उत्तम साधन है। बार–बार नारीय भव प्राप्त नहीं होता, इसलिए जागरूक होकर उत्साह व प्रसन्नता से व्रत धारण करें, उससे दु:ख में सुख की प्राप्ति होगी। इस प्रकार रुक्मावती ने मुनीश्वर के मुखारविन्द से व्रत का माहात्म्य विधि और फल सुनकर अपनी दरिद्रता की बिना परवाह किये मुनिराज के पास व्रत लेने का मन में निश्चय किया। उसने मुनिराज को नमोऽस्तु करके अपना भाव व्यक्त किया। मुनिराज ने पंचपरमेष्ठी की साक्षी में उसको व्रत दिया। श्री गुरुमुख से व्रत लेकर प्रसन्न मन से रुक्मावती घर गयी और शक्ति अनुसार साधन सामग्री से व्रत शुरू किया।

उसी गाँव में उसका गुरुदेव नाम का भाई रहता था। वह बड़ा सेठ था। उसने अपने पुत्र के यज्ञोपवीत संस्कार के निमित्त गाँव के सारे नागरिकों को एक सप्ताह पर्यन्त इच्छित भोजन कराकर संतुष्ट करने के भाव से घर–घर निमंत्रण भेजा, परन्तु अपनी बहन को निमंत्रण नहीं भेजा, क्योंकि वह दरिद्री थी, अगर आयेगी तो देखकर लोक में निन्दा होगी, सोचकर उसे याद तक नहीं किया। गाँव के छोटे–बड़े सब लोग खा–पीकर जब उसी के दरवाजे के सामने से जाने लगे तो उसे आश्चर्य हुआ और सोचने लगी कि– मैं और मेरा भाई एक ही हाड़, मांस, रक्त, पिंड के हैं, उसने सब लोगों को संतुष्ट किया है, मैंने उसके ऐसे क्या घोड़े मारे हैं ? फिर सोचा काम की धाँधली में भूल गया होगा इसलिये बेकार उस पर रोष करके अपने सोने जैसे भाई को दोष देना ठीक नहीं। निमन्त्रण नहीं भेजा तो क्या हुआ ? भाई ही का तो घर है, जाने में क्या हर्ज है। ऐसा विचार करके वह बाल–बच्चों सहित जीमने गई। बच्चों को सामने लेकर स्त्रियों की पंगत में बैठ गई। थोडी देर बाद उसका भाई कौन आया, कौन रहा, यह जानने के लिए वहाँ घूम रहा था, उसका ध्यान अपनी बहिन की तरफ गया तो पास आया और गुस्से

में बोला– ''बहिन तू आज यहाँ कैसे आई ? तेरी गरीबी के कारण मैंने जानकर तुझे नहीं बुलाया। तेरे पास न अच्छे कपड़े हैं न गहने। तुझे ऐसी दरिद्र देखकर लोग मुझ पर हँसेंगे। इसलिए आज आयी तो आयी मगर कल मत आना, समझी। बहिन बेचारी लज्जित होकर नीची गर्दन कर खाना खाकर, बच्चों को लेकर घर आ गई। दूसरे दिन भी बच्चे कहने लगे माँ आज भी मामा के यहाँ खाने के लिए जायेंगे। यह सुनकर माँ के पेट में खलबली मची। उसने बच्चों को बहुत डांटा मगर वे माने नहीं, उनके हठ के कारण फिर मन में विचार किया कि कैसा भी हो अपना भाई ही तो है, बोला तो क्या हुआ, अपनी गरीबी है तो सुनना ही पड़ेगा, मगर आज का निर्वाह तो होगा। ऐसा सोचकर दूसरे दिन भी बच्चों को लेकर भाई के घर गई और खाने को बैठी। कल की तरह आज भी भाई की सवारी पंगत में आने पर उसने उसे देखा और बोला – ''बहिन तू कैसी भिखारिन है। कल तुझे मना किया था तो भी आज सूअरनी की तरह बच्चों को लेकर आ गई? तुझे शर्म कैसे नहीं आई? आज आई तो आई अगर कल फिर आई तो हाथ पकड़कर निकाल दूँगा। उस बेचारी ने चुपचाप यह सुन लिया और खाने के बाद उठकर अपने घर चली गयी। तीसरे दिन भी इसी प्रकार गई, तब भाई को खूब गुस्सा आया और उसने उसको धक्का देकर बाहर निकाल दिया। उसे बहुत दुःख हुआ, घर आकर बहुत फूट–फूट कर रोयी। उसके मन में विचार आया कि मैंने कौनसा घोर पाप किया जिससे इस जन्म में मुझे घोर दरिद्रता की मार पड़ रही है। सच है अनन्त जन्मों के पाप की राशि इस दरिद्रता की अवस्था है। इसकी अपेक्षा तो नरक के दुःखों से भुन जाना ही अच्छा होता, अब यह यम–यातना सही नहीं जाती, इससे तो मरण अच्छा; क्योंकि वह तो एक बार ही भोगना पड़ता है; परन्तु दरिद्रता का दुःख जीवनपर्यन्त भोगना पड़ता है, धिक्कार है ऐसे जीने को। हे देवी पद्मावती ! हे अम्बिका माता ! तू ही मेरी सहायता कर माँ ! मुझे जगत में किसी का आधार नहीं, तू तो आसरा दे माता ! इस प्रकार करुण क्रन्दन करके वह खूब रोई, रोते–रोते उसे नींद आ गई ! नींद में उसे स्वप्न आया। उसके रूदन की ध्वनि श्री पद्मावती देवी के कानों पर जा टकराई। महादेवी तत्काल मुकुट, कुण्डल, हार आदि पहनकर एक हाथ में धर्मचक्र लिए जगमगाती पोशाक पहन करके पास आकर खड़ी हो गई और कहने लगी कि – ''हे महाभागे ! तू दुःखी न हो, घबरा मत, तू जो आचरण कर रही है उस सप्त शुक्रवार व्रत को मैं अच्छी तरह जानती हूँ। आज तुझे दरिद्रता सम्बन्धी अतिशय दुःख हुआ है तथापि तेरे कष्ट अत्यन्त तेज से युक्त है–

कष्टाधीनं ही दैव, देवाधीनं सुकृतफलं तथैव।
सुज्ञावाक्या चरिता भुक्ति: मुक्ति: तद्धीना।।

अर्थ–कष्टाधीन दैवयोग है। दैवाधीन ही पुण्य का फल है। इसलिए महान्पुरुषों के द्वारा कथित मार्ग पर चलना चाहिये उसके आधीन संसार के भोग व मुक्ति है। तू ध्यान दे और एक निष्ठापन से श्री जिन परमात्मा का चिन्तन कर, उससे तेरा कल्याण होगा। ऐसा कहकर वह देवी अदृश्य हो गई। रुक्मावती ने नींद से जागकर देखा तो वहाँ कोई नहीं दिखाई दिया यह चमत्कार क्या चमत्कार है ? कहकर वह उठ बैठी, मगर उसका मस्तक शून्य हो गया, उसे कुछ भी नहीं सूझा तो फिर वह श्री जिन मन्दिर में जाकर शान्त चित्त से श्री पद्मावती महादेवी का मुख कमल देखने लगी। तब उसे वह मूर्ति हँसती हुई दिखाई दी। उस वक्त रुक्मावती दोनों हाथ जोड़कर विनती करने लगी कि – ''हे देवी ! महामाते ! अम्बिके ! पद्मावती माता !

शरण भी पायो धांवरो धावं या ठाया।
अनाथ जाली तुमची दुहिता। भूवरी नुरला मजला त्राता।।
भाऊ–भाऊ म्हणुनि आता। कोठे जाऊ। तुझेचिमनमनवाहू।।

अर्थ – मैं तुम्हारी शरण को पाया है, मेरी रक्षा करो, मुझे सन्मार्ग पर लगाओ। तुम्हारी लड़की अनाथ है। इस जगत में मेरा कोई रक्षक नहीं रहा। भाई, भाई कहती हुई अब कहाँ जाऊँ, मैंने तुम्हें ही अपने मन में धारण किया है।

इस प्रकार बहुत देर तक प्रार्थना व भक्ति करने के बाद उसे भान हुआ कि घर में बच्चे भूख से व्याकुल होंगे, सोचकर ध्यान से उठी और घर को चली। घर आकर देखा कि बच्चे कामदेव के अवतार के समान दिख रहे हैं। घर में धन–धान्य की भरभराहट होने लगी, जगह–जगह वैभव खुलते लग रहे हैं। हर काम में यश की वृद्धि हो रही है और सामने नयी नवकोनी हवेली बनकर तैयार है। घर में लक्ष्मी की बाढ़ ऐसी आयी हुई है कि शायद सावन मास में बहने वाली नदी का प्रवाह भी उससे कम हो। यहाँ–तहाँ आनन्द है। सच देखा जाये तो जहाँ उसे दो वक्त के खाने की भी मारामारी थी वहाँ अब पाँच पकवान की थालियाँ भरी दिखने लगी हैं। अनेक प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त हैं। सब तरह से घर में भरभराहट है। उसकी कीर्ति दूर–दूर तक फैल गई है। यह कीर्ति सुनकर उसका भाई आश्चर्यचकित हो गया। अपनी बहिन का आदर सत्कार करना चाहिये विचार कर वह स्वयं उसके घर आया और बहिन से बोला – बड़ी बहन ! तुम कल मेरे घर खाने को आना। ना मत करना, तुम आओगी तो ही मैं खाना खाऊँगा, नहीं

तो मैं भी खाना नहीं खाऊँगा, समझी। बहिन ने सोचा, चलो, अपना भाई बड़े सम्मान से बुलाता है, अब हम श्रीमंत हुए तो गर्व नहीं करना चाहिये, इसका इस समय अपमान करना ठीक नहीं है। सिर्फ इसको अपने किए हुए का पश्चात्ताप हो और सन्मार्ग प्रवर्तक होकर अहंकार छोड़े ऐसा विचार कर वह अच्छे गहने तथा बढ़िया ओढ़नी पहनकर उत्तम श्रृंगार करके सम्मान से भाई के घर गई। भाई बड़ी आस्था से राह देख रहा था, उसके आने के साथ उसे पांव धोने को गर्म जल दिया, पाँव पोंछने को रूमाल दिया। थाली परोसने पर दोनों बहन–भाई बड़े प्रेम से पास–पास खाने को बैठे। बिछे हुये पाटे पर बहिन ने बदन पर से ओढ़नी उतार कर रखी, भाई ने समझा गर्मी लगती होगी, बाद में शरीर पर से गहने उतारकर रखे। भाई ने सोचा अपनी कोमल बहिन को बोझा लगता होगा सो उतारे हैं। परन्तु उसके बाद बहिन ने पहला चावल का ग्रास उठाया और ओढ़नी पर रखा। पूरण पोली उठाई और हार पर रखी। भाजी उठाई और कंठी पर रखी, लड्डू उठाया भुजाबंध पर रखा, जलेबी उठाई और मोती के कंगन पर रखी। यह देखकर भाई ने पूछा बड़ी बहन ! तुम यह क्या करती हो? बहिन ने शान्त मुद्रा से कहा मैं जो करती हूँ वह ठीक है, जिनको तुमने खाने को बुलाया है उनको मैं खाना दे रही हूँ। उसकी कुछ समझ में नहीं आया, फिर उसने विनती की, बहिन ! अब तो तुम खाओ। तब बहिन ने कहा–हे भाईसाहब ! आज खाना मेरा नहीं है, इस लक्ष्मी बहन का है। मेरा खाना मैं पहिले ही खा चुकी हूँ। ऐसा सुनकर भाई के मन में पश्चात्ताप हुआ। उसने उसके पाँव पकड़े और बीती हुई गलती की क्षमा मांगी। बहिन भी उस समय बहुत दु:खी हुई और दोनों आपस में गले मिले और बाद में दोनों आनन्द से खाने को बैठे, मन में जो शल्य था उसे निकाल दिया।

जिनकी कृपा के प्रभाव से अपार सम्पत्ति प्राप्त हुई उन पद्मावती माताजी को दोनों कुल के छोटे–बड़े सभी कुटुम्बीजन सेवा करने लगे और अपनी अगणित सम्पत्ति का उपयोग अनेक व्रत उद्यापन चतुर्विध संघ को दान, जिन मंदिर जीर्णोद्धार, सिद्धक्षेत्र–क्षेत्राधिक सम्बन्धी धर्मकार्यों में करने लगे। सहस्रनाम मन्त्र का क्रम से कुंकुम अर्चन करने लगे। इन सब परिणामों को देखकर वहाँ के राजा ने भी भक्ति में दृढ़ होकर जिनधर्म की खूब ठाठबाट से प्रभावना की। बाद में थोड़े ही समय में सर्व कुटुम्बीजनों ने राजा सहित जिन दीक्षा धारण कर घोर तप किया और वे चतुर्गति का नाश कर अन्त में मोक्ष गये।

॥ इति सप्त शुक्रवार व्रत विधान कथा सम्पूर्ण॥

(पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–)

3

2 卐 24

5

श्लोक– रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे॥

मंगलाष्टकम्

(नोट– ''कुर्वंतु ते मंगलम्'' बोलते हुए पुष्पांजलि क्षेपण करें)

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र–महिता: सिद्धाश्च सिद्धीश्वरा:।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा: पूज्या उपाध्यायका:॥
श्रीसिद्धान्त–सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधका:।
पञ्चैते परमेष्ठिन: प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मंगलम्॥

श्रीमन्नम्र – सुरा – सुरेन्द्र – मुकुट, प्रद्योत – रत्नप्रभा–
भास्वत्पाद–नखेन्दव: प्रवचनाम्भोधीन्दव: स्थायिन:।
ये सर्वे जिन–सिद्ध–सूर्यनुगतास्ते पाठका: साधव:,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरव: कुर्वन्तु ते मंगलम्॥1॥

सम्यग्दर्शन–बोध–वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति–श्री–नगराधिनाथ–जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रद:।
धर्म: सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मंगलम्॥2॥

नाभेयादि–जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशति:,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु–प्रतिविष्णु–लांगलधरा: सप्तोत्तरा विंशति:
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषा: कुर्वन्तु ते मंगलम्॥3॥

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता,
श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा।
द्वात्रिंशत् त्रिदशाऽधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु ते मंगलम्॥4॥

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पञ्च ये,
ये चाष्टांग-महानिमित्त-कुशला येऽष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते मंगलम्॥5॥

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणाऽवनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मंगलम्॥6॥

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनाऽमरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मंगलम्॥7॥

यो गर्भाऽवतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मंगलम्॥8॥

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय रहिता निर्वाण लक्ष्मीरपि॥9॥

॥ इति मंगलाष्टकम्॥

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।
पञ्च गुरूणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे॥

3

2 卐 24

5

विनय पाठ

(दोहा)

प्रथम जिनेश्वर देव हो, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी नाथ तुम, ज्ञानरवि मर्मज्ञ॥1॥
केवलज्ञानी बन प्रभो, हरा जगत् अंधियार।
तीन लोक के बंधु बन, किया जगत् उपकार॥2॥
धर्म देशना से मिला, जग को दिव्य प्रकाश।
तव चरणों में नित रहे, यही करें अरदास॥3॥
कर्म बेड़ियाँ तोड़ने, भक्ति करें त्रयकाल।
तीन योग से हे प्रभो !, चरणों में नत भाल॥4॥
चतुर्गति भव भ्रमण से, तारों हमें जिनेश।
दयानिधि जिन ! कर दया, हरलो पाप विशेष॥5॥
प्रभुवर पूजा आपकी, सर्व रोग विनशाय।
विष भी अमृत हो प्रभो !, शत्रु मित्र बन जाय॥6॥
हलधर बलधर चक्रधर, अर्चा के उपहार।
परम्परा जिनभक्ति से, दे प्रभु पद उपहार॥7॥
बड़े पुण्य से जिन मिले, मिला प्रभु का द्वार।
मुक्त करो त्रय रोग से, विनती बारम्बार॥8॥
हम सेवक प्रभु आपके, हे अबोध ! अनजान।
राग–द्वेष अज्ञान हर, दे दो सच्चा ज्ञान॥9॥

मंगल उत्तम शरण है, मंगलमय जिनधर्म।
मंगलकारी सब गुरु, हरो हमारे कर्म॥10॥
चौबीसों जिनवर नमूँ, नमन पंच परमेश।
जिनवाणी गणधर गुरु, 'आस्था' नमें हमेश॥11॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय-जय-जय - नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र महिमा

(चौपाई)

अपवित्र या जन पवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
नमस्कार मंत्रों को ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें॥1॥
सर्व अवस्था में भी ध्यायें, पापी भी पावन बन जाये।
जो सुमिरे नित परमातम को, अन्दर बाहर शुचि बने वो॥2॥
अपराजित ये मंत्र कहाता, सब विघ्नों को दूर भगाता।
सब मंगल में मंगलकारी, प्रथम सुमंगल जग उपकारी॥3॥
महामंत्र णवकार हमारा, सब पापों से दे छुटकारा।
सब मंगल में प्रथम कहाता, महामंत्र मंगल कहलाता॥4॥

परम ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, सिद्धचक्र सुन्दर बीजाक्षर।
मैं मन-वच-काया से नमता, नमस्कार मंत्रों को करता॥5॥
अष्टकर्म से मुक्त जिनेश्वर, श्रीपति जिन मंदिर परमेश्वर।
सम्यक्त्वादि गुणों के स्वामी, नमस्कार मैं करता स्वामी॥6॥
जिनवर की संस्तुति करने से, मुक्ति मिले सारे विघ्नों से।
भूतादि का भय मिट जाता, विष निर्विष निश्चित हो जाता॥7॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे॥1॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शंभु छंद)

श्री मज्जिनेन्द्र हो विश्ववंद्य, तुम तीन जगत के ईश्वर हो।
तुम चऊ अनंत गुण के धारी, स्याद्वाद धर्म परमेश्वर हो॥
श्री मूल संघ की विधि से मैं, अपना बहु पुण्य बढ़ाने को।
मैं मंगल पुष्प चढ़ाता हूँ, जिन पूजा यज्ञ रचाने को॥1॥
त्रैलोक्य गुरु हे जिनपुंगव !, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
अपने स्वभाव में सुस्थित जिन, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥
सम्पूर्ण रत्नत्रय के धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
हे समवशरण वैभव धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥2॥
अविराम प्रवाहित ज्ञानामृत, सागर को पुष्प समर्पित है।
निज परभावों के भेद विज्ञ, जिनवर को पुष्प समर्पित है॥

त्रिभुवन को सारे द्रव्यों के, नायक को पुष्प समर्पित है।
त्रैकालिक सर्व पदार्थों के, ज्ञायक को पुष्प समर्पित है॥3॥
पूजा के सारे द्रव्यों को, श्रुत सम्मत शुद्ध बनाया है।
यह भाव शुद्धि के अवलम्बन, द्रव्यों को शुद्ध सजाया है॥
शुचि परमातम का अवलम्बन, आतम को शुद्ध बनाता है।
उसको पाने हे जिन ! तेरी, यह पूजा भव्य रचाता है॥4॥
अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम जिन, उनमें न सचमुच गुरुता है।
मैं भी स्वभाव से उन सम हूँ, मुझमें न निश्चय लघुता है॥
प्रभु से हो एकाकार मेरा, मैं ऐसी भक्ति रचाता हूँ।
केवल ज्ञानाग्नि में अपना, मैं पुण्य समग्र चढ़ाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमोऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

वृषभ सुमंगल करे हमारा, अजित सुमंगल करे हमारा।
संभव स्वामी मंगलकारी, अभिनंदन हैं मंगलकारी॥1॥
सुमतिनाथ हैं मंगलकारी, पद्मप्रभु हैं मंगलकारी।
श्री सुपार्श्व जिन मंगलकारी, चंद्रप्रभु हैं मंगलकारी॥2॥
पुष्पदंत हैं मंगलकारी, शीतल स्वामी मंगलकारी।
श्री श्रेयांस जिन मंगलकारी, वासुपूज्य हैं मंगलकारी॥3॥
विमलनाथ हैं मंगलकारी, श्री अनंत जिन मंगलकारी।
धर्मनाथ हैं मंगलकारी, शांतिनाथ हैं मंगलकारी॥4॥
कुंथुनाथ हैं मंगलकारी, अरहनाथ हैं मंगलकारी।
मल्लिनाथ हैं मंगलकारी, मुनिसुव्रत हैं मंगलकारी॥5॥
नमि जिनवर हैं मंगलकारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।
पार्श्वनाथ हैं मंगलकारी, वीर जिनेश्वर मंगलकारी॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥2॥

अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥3॥

स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥4॥

फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥5॥

अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥6॥

मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥7॥

उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥8॥

आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥9॥

क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥10॥

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज- हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों॥
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा॥
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन-माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म-जरा-मृत हरता हूँ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना॥ देव शास्त्र..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू॥ देव शास्त्र..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥4॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया॥ देव शास्त्र..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा॥ देव शास्त्र..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ॥ देव शास्त्र..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है॥ देव शास्त्र..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है॥ देव शास्त्र..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोड़ूँ सब अभिमान॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा– काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय-जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर-नार॥

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ॥
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ॥1॥

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ॥
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि-सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले॥2॥

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत-शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन॥
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन॥3॥

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता॥

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा।।4।।

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन।।
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर।।5।।

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन।।
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी।।6।।

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरुओं को है वंदन।।7।।

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें।।
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

ऋद्धि मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि-जिणाणं
3. णमो परमोहि-जिणाणं
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं
5. णमो अणंतोहि-जिणाणं
6. णमो कोट्ठ-बुद्धीणं
7. णमो बीज-बुद्धीणं
8. णमो पादाणु-सारीणं
9. णमो संभिण्ण-सोदारणं
10. णमो सयं-बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं
12. णमो बोहिय-बुद्धाणं
13. णमो उजु-मदीणं
14. णमो विउल-मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस-पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
18. णमो विउव्वइट्ठि-पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण-समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी-विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग-तवाणं
26. णमो दित्त-तवाणं
27. णमो तत्त-तवाणं
28. णमो महा-तवाणं
29. णमो घोर-तवाणं
30. णमो घोर-गुणाणं
31. णमो घोर-परक्कमाणं
32. णमो घोर-गुण-बंभयारीणं
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं
38. णमो मण-बलीणं
39. णमो वचि-बलीणं
40. णमो काय-बलीणं
41. णमो खीर-सवीणं
42. णमो सप्पि-सवीणं
43. णमो महुर सवीणं
44. णमो अमिय-सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो सव्व साहूणं

(णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।)

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ पूजा

(गीता छंद)

सब तीर्थ के श्री पार्श्व जिन, चिंतामणि जगख्यात हैं।
चिंता हरें हर भक्त की, अतिशय करें दिनरात वे॥
पद्मावती अहिपति विराजें, पार्श्व जिन तुम पास में।
आह्वान हम करते प्रभो, पुष्पांजलि ले हाथ में॥

ॐ ह्रीं श्री चितामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री चितामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चितामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

हर तीर्थ में अभिषेक होता नित्य आपका।
हम इन्द्र बन न्हवन करें, जिनेश आपका॥
सब तीर्थ के चिंतामणि श्री पार्श्वनाथ जी।
चिंता हरो सभी हमारी पार्श्वनाथ जी॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गंध चंदनादि आप चर्ण में लगा।
तुम भक्ति से मिटायें पाप ताप का दगा॥ सब तीर्थ..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि... संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अखंड रत्न मुष्ठि पुंज में भरें।
अक्षय अखंड पद विशेष आप से वरें॥ सब तीर्थ..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम नील कमल आदि सर्व पुष्प चढ़ायें।
हे बालयति नाथ ! हम भी काम नशायें॥ सब तीर्थ..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि... कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य के अनेक भव्य थाल सजायें।
पूजा रचायें तेरी क्षुधा कर्म नशायें।।
सब तीर्थ के चिंतामणि श्री पार्श्वनाथ जी।
चिंता हरो सभी हमारी पार्श्वनाथ जी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे पार्श्व ! आप द्वार में, जो दीप लगायें।
उसके समस्त कार्य आप सिद्ध करायें।। सब तीर्थ..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित दशांग धूप अग्नि पात्र में चढ़ा।
तुम ध्यान लगा भग्न करें पाप का घड़ा।। सब तीर्थ..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम आम द्राक्ष दाड़िमादि फल के थाल ले।
पूजा रचायें तेरी पहुँचे लोक भाल पे।। सब तीर्थ..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम माल ध्वजा दीप संग द्रव्य चढ़ायें।
अनुपम अनर्घ सौख्य पार्श्व भक्ति से पायें।। सब तीर्थ..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि... अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक (सखी छंद)

वैशाख कृष्ण द्वितीया में, प्रभु आये वामा उर में।
पितु अश्वसेन हर्षाये, काशी में खुशियाँ छायें।।
बहु देवी सुर बालायें, माँ की सेवा में आयें।
उत्तम द्रव्यों को लाये, भक्ति से गोद भरायें।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

जहँ जन्मे थे प्रभु पारस, वह उत्तम नगर बनारस।
शुभ पौष कृष्ण एकादश, त्रिभुवन बोले जय पारस।।

सौधर्म कहे हे माता !, मैं तुमको शीश झुकाता।
हमको निज लाल दिखा दो, पारस के दर्श करादो।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

वह जन्म तिथि सुखदायी, जो तप तिथि बनकर आयी।
वैराग्य भाव जिन भायें, जग वैभव तजके जायें।
आहार हुआ जिस घर में, आश्चर्य हुये तत्क्षण में।
जो दाता प्रथम कहाये, वो प्रभु संग शिवपुर जाये।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

भीमावन में प्रभु आये, वे अविचल ध्यान लगायें।
कमठासुर सम्बर आया, दुःसह उपसर्ग रचाया।।
धरणेन्द्र प्रिया संग आये, प्रभु का उपसर्ग मिटाये।
वदी चैत चतुर्थी आयी, अर्हंत बने जिनरायी।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां[1] केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

प्रभु ने वसु कर्म नशाए, निज आतम ध्यान लगाए।
सम्मेदगिरि पर जाके, मुक्तिश्री को अपनाएँ।।
निज समोशरण विघटा के, प्रभु सिद्ध लोक में जाते।
श्रावण सुदी सप्तमी आये, हम मोक्ष महोत्सव ध्यायें।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

पारसनाथ अष्ट दिशा के अर्घ (चौपाई)

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

पूर्व दिशा के पारस देवा, सुर नर करते उनकी सेवा।
हम त्रयकालिक भक्ति रचायें, पार्श्व प्रभु को अर्घ चढ़ायें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्व दिशा स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1 चै.कृ. 14 म.पु.।

अग्नि दिशा के पारस स्वामी, अग्नि दोष हर्त्ता जगनामी।
उनको दीपक अर्घ चढ़ायें, ध्यानाग्नि से कर्म जलायें॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं आग्नेय दिशा स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिश के पार्श्व जिनेशा, यम जेता जिनवर तीर्थेशा।
हम भी यम जीते त्रिपुरारी, अर्घ चढ़ायें सब नर-नारी॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं दक्षिण दिशा स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नैऋत्य दिश के पारस स्वामी, नील वर्ण मनहर अभिरामी।
हम निशदिन प्रभु अर्घ चढ़ायें, निज आतम स्वामित्व जगायें॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं नैऋत्य दिशा स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वरुण दिशा के पारस सारे, वैर भाव विनशायें सारे।
अर्घ करो स्वीकार हमारा, हरा भरा हो यह जग सारा॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिम दिशा स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पवन दिशा के पारस ध्यायें, वात विकार सभी विनशायें।
विजय पार्श्व को अर्घ चढ़ायें, व्यंतरकृत बाधा विनशायें॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वायव्य दिशा स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिश के पारस बाबा, अक्षयदानी श्रुत का दावा।
जय-जय हो प्रभु पार्श्व तुम्हारी, सब चिंतायें हरो हमारी॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तर दिशा स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पारस सब ईशान्य दिशा के, हमें बचाओ पाप निशा से।
हम सब जिन को अर्घ चढ़ायें, पार्श्व प्रभु को शीश झुकायें॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं ईशान्य दिशा स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

भरत क्षेत्र की सर्व दिशा में, पार्श्वनाथ के मंदिर हैं।
सर्वादिक तीर्थो नगरों में, पार्श्वनाथ जिन मनहर हैं॥
सर्व तीर्थ व नगर विराजे, पार्श्वनाथ को वंदन हो।
सर्व दिशा में अर्घ चढ़ायें, प्रभु को शत अभिनंदन हो॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व दिशा–विदिशा सर्वतीर्थ नगर, ग्राम, जिनालय स्थित श्री सर्व पार्श्वनाथ जिनप्रतिमाभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : अखिल विघ्न की शांतिहित, करूँ विनत जलधार।
नील कृष्ण बहु पद्म की, पुष्पांजलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : **ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।** (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : पार्श्व प्रभु को नमन कर, जिनभक्ति मन धार।
जयमाला मैं पढ़ रहा, करूँ कर्म पर वार॥

(शंभु छंद)

वाराणसी नगरी धन्य हुई, जहाँ पारस रवि था उदित हुआ।
पितु अश्वसेन नृप हर्षाए, माँ वामा का मन मुदित हुआ॥
सौधर्म आदि वसु इंद्रों के, तत्क्षण ही आसन कम्पाए।
शुभ धन्य घड़ी वह आई है, मन ही मन सब जन हर्षाए॥1॥
शचि जिन बालक को निरख–निरख, निर्मल सम्यक्त्व बनाती है।
मुक्तिपथ के अनुगामी की, सेवा से चिर सुख पाती है॥
शचि संग सुमेरु पर जाकर, सौधर्म वहाँ अभिषेक करे।
इन्द्राणी भी क्षीरोदधि ले, जिन बालक का अभिषेक करे॥2॥
सब देवों ने उद्घोष किया, ये पार्श्व प्रभु कहलाएँगे।
इनके चरणों में आकर के, कई जन कुंदन बन जाएँगे॥
इक दिन हाथी पर हो सवार, पारस प्रभु वन को निकल गए।
जग की जड़ता चंचलता लख, वे मन ही मन में विकल भए॥3॥

वन में इक मूरख तापस जो, अग्नि में खुद को जला रहा।
निज पर बहु जीवों को दुःख दे, संसार भ्रमण में भुला रहा॥
प्रभु ने उसको संकेत दिया, अज्ञान मान को भंग किया।
अति त्रस्त दुःखित थे नागयुगल, उनको भक्ति का रंग दिया॥4॥
इक दिन प्रभु को वैराग्य हुआ, संसार अथिर यह जान लिया।
द्वादश अनुप्रेक्षाएँ भाकर, मुक्तिपथ पर अभियान किया॥
विंध्यावली में आकर ऋषिवर, भीमा अटवी में ध्यान धरा।
तत्क्षण दस भव का वैरी वह, कालासुर शम्बर आन मरा॥5॥
बिन कारण ही बहु क्रोधित हो, उपसर्ग वहाँ प्रारम्भ किया।
ओले गिरी शोले फेंक-फेंक, संकट देना आरंभ किया॥
प्रभु पर संकट हो रहा जान, पदमावती व अहिपति आये।
पदमावती प्रभु को शीश धरे, धरणेन्द्र देव फण फैलाये॥6॥
तत्क्षण ही केवलज्ञान हुआ, रेवा सरिता के शुभ तट पर।
विंध्यावली पावन धन्य हुआ, सद्ज्ञान दिवाकर को पाकर॥
जिनवर तुमरी महिमा न्यारी, अतिशय शक्ति अद्भुत भारी।
इस भरत क्षेत्र में सर्वाधिक, पारस प्रतिमाएँ सुखकारी॥7॥
होम्बुज पारस और पार्श्वगिरि, जिन्तूर, चूलगिरि, नैनागिर।
अहिक्षेत्र कनकगिरी कुन्थुगिरी, अंदेश्वर औ सम्मेदशिखर॥
चिंतामणि नवग्रह धर्म तीर्थ, मांगीतुंगी वा मुक्तागिर।
बीजापुर बाबानगर क्षेत्र, कचनेर बनारस पद्मेश्वर॥8॥
हे प्रभु ! अणिन्दा आदि में, तेरी शोभा महिमा भारी।
कलिकुंड रविव्रत आदि से, दुःख मेट रहे सब नर-नारी॥
जिनवर तुम गुण महिमा भारी, हम कह न सके हे त्रिपुरारी।
'गुप्ति' तुम गुणवंदन करके, बन जाए बस समताधारी॥9॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभंगी : जय-जय तीर्थेश्वर हे अंकेश्वर ! हे विन्द्येश्वर ! पार्श्व प्रभु !
कल्याणों के घर, दो गुप्ति वर, भाव सहित मैं नमन करूँ॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री धरणेन्द्र यक्ष की पूजा

(गीता छंद)

धरणेन्द्र प्रभु के भक्त बन, प्रभु पार्श्व की अर्चा करें।
हम पार्श्व प्रभु के यक्ष श्री, धरणेन्द्र की अर्चा करें॥
प्रभु पार्श्व से नवकार सुन, पद पा लिया यक्षेन्द्र का।
सम्मान करते भक्तगण, पद्मावती धरणेन्द्र का॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनशासन रक्षक, कमठोपसर्ग निवारक, जिनधर्म प्रभावक श्री धरणेन्द्र यक्ष ! अत्रागच्छ–आगच्छ, तिष्ठ–तिष्ठ इति आह्वाननं स्थापनम्। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ धरणेन्द्राय स्वाहा। ॐ धरणेन्द्र परिजनाय स्वाहा। धरणेन्द्रानुचराय स्वाहा। धरणेन्द्र महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।(14)।

काव्य छंद

स्वर्ण कुंभ ले आज, तीर्थों का जल लायें।
नागराज के अग्र, जल के कुंभ चढ़ायें॥
पार्श्वनाथ के यक्ष, श्री धरणेन्द्र कहायें।
जो हैं प्रभु के भक्त, उनके कष्ट मिटायें॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्र यक्षाय जलं समर्पयामि स्वाहा।

गंध सुगंध अपार, शीतल चंदन लायें।
नागलोक के भूप, तुमको भेंट चढ़ायें॥ पार्श्वनाथ... ॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्र यक्षाय गंधं समर्पयामि स्वाहा।

अक्षत अक्षय पुंज, बहुविध मुक्ता लायें।
गजमोती के हार, श्रद्धा से पहनायें॥ पार्श्वनाथ... ॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्र यक्षाय अक्षतं समर्पयामि स्वाहा।

छह ऋतुओं के पुष्प, पुष्पहार ले आये।
अहिपति का श्रृंगार, मंत्र सहित करवायें॥
पार्श्वनाथ के यक्ष, श्री धरणेन्द्र कहायें।
जो हैं प्रभु के भक्त, उनके कष्ट मिटायें॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्र यक्षाय पुष्पं समर्पयामि स्वाहा।

छप्पन व्यंजन थाल, श्रेष्ठ मिठाई लाये।
तुम्हें चढ़ा हे यक्ष !, भक्त सुखी हो जाये॥ पार्श्वनाथ... ॥5॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्र यक्षाय नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा।

दीपक विविध प्रकार, जलते जगमग लायें।
यक्ष आपके पास, निशदिन दीप जलायें॥ पार्श्वनाथ... ॥6॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्र यक्षाय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

सुरभित बहुविध धूप, जला दिशा महकायें।
धूप चढ़ा हर भक्त, निज जीवन महकायें॥ पार्श्वनाथ... ॥7॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्र यक्षाय धूपं समर्पयामि स्वाहा।

बहुविध फल के थाल, तुमको अर्पें बाबा।
भक्त सफल हो जाय, यह जिनश्रुत का दावा॥ पार्श्वनाथ... ॥8॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्र यक्षाय फलं समर्पयामि स्वाहा।

बहु आभूषण वस्त्र, वैभव सहित चढ़ायें।
यक्ष तुम्हारे भक्त, उत्तम वैभव पायें॥ पार्श्वनाथ... ॥9॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्र यक्षाय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

कालसर्प दोष निवारक अर्घ

(नरेन्द्र छंद)

सर्व महोरग कालसर्प के, सर्व दोष परिहार करें।
अनंत वासुकी आदि अहिपति, भक्तों का उद्धार करें॥
तुम प्रभु पारस के आराधक, हम भी उनके सेवक हैं।
यज्ञ भाग दे तुष्ट करें अब, जो जिनश्रुत गुरु सेवक हैं॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अनंत, वासुकी, तक्षक, कर्कोटक, पद्म–महापद्म, शंखपाल, कुलिश, जय–विजय आदि सर्व महोरगाश्च मम सर्व विध कालसर्प दोष निवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

केतु ग्रह दोष निवारक अर्घ

(नरेन्द्र छंद)

केतुग्रह पारस के सेवक, समदृष्टि वरदानी हैं।
नभ मंडल में विचरण करते, जिनमत के श्रद्धानी हैं॥
केतुग्रह की सब बाधायें, हे सुर ! अपने आप हरो।
तुमको हम यज्ञांश दान दे, तुम भी सत् उपकार करो॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं केतुग्रह जनित सर्वदोष निवारणाय केतुमहाग्रहाय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (काव्य – छंद)

ध्वजा अर्घ बहुवाद्य, तेल चना गुड़ लायें।
करते हम सम्मान, मंगल द्रव्य चढ़ायें॥
पार्श्वनाथ के यक्ष, श्री धरणेन्द्र कहायें।
जो हैं प्रभु के भक्त, उनके कष्ट मिटायें॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्र यक्षाय स्वायुध वाहन वधू चिन्ह स्वगण परिवार वृत्ताय तुभ्यं इदं अर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं ताम्बूलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

जयमाला

दोहा– यक्षदेव धरणेन्द्र की, गायें हम जयमाल।
भक्तों के संकट हरें, करते मालामाल॥

नरेन्द्र छंद

पार्श्व प्रभु की भक्ति वंदना, अतिशय पुण्य दिलाये।
प्रभु चरणों की सेवा करने, सुर–नर पशुगण आये॥
पार्श्व प्रभु के शासन सेवक, श्री धरणेन्द्र कहाये।
उनकी ये सुन्दर जयमाला, हम सब मिलकर गायें॥1॥

जलते नाग युगल को स्वामी, मंगल मंत्र सुनायें।
शांति से वे नाग युगल मर, स्वर्गों का सुख पायें॥
इक दिन पार्श्व प्रभु मुनि बनकर, वन में ध्यान लगायें।
करे कमठ उपसर्ग भयानक, सात दिवस हो जायें॥2॥

श्री यक्षेन्द्र देव का आसन, तब कंपित हो जाये।
पद्मावती धरणेन्द्र शीघ्र ही, नागरूप धर आये॥
पार्श्व प्रभु को अपने सर पे, पद्मांबा बैठाये।
पार्श्व प्रभु के सर पे तुमने, अपने फण फैलायें॥3॥

दूर किया उपसर्ग प्रभु का, कमठ दुष्ट भग जाये।
केवलज्ञानी बने प्रभुवर, समवशरण रच जाये॥
श्री धरणेन्द्र पार्श्व प्रभुवर के, शासन यक्ष कहाते।
सब भक्तों की रक्षा करते, जो भी तुमको ध्याते॥4॥

करते जो सम्मान आपका, उनका मान बढ़ाते।
जो तुमको यज्ञांश दान दे, उनके दिन फिर जाते।
तेल चना गुड़ पुष्प हार व, मुकुट सूत्र हम लायें।
वस्त्राभूषण ध्वजा दंड व, डमरू छत्र चढ़ायें॥5॥

करे आरती दीप लगाकर, तुम दरबार सजायें।
जहाँ-जहाँ बाबा तुम प्रतिमा, उसको अर्घ चढ़ायें॥
तुम सम्पूर्ण जगत में बाबा, जिनमत ध्वज फहराओं।
जो जिनमत पर रखें आस्था, उनके कष्ट मिटाओं॥6॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनशासन सेवक धरणेन्द्र यक्षाय जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

दोहा- पार्श्वनाथ के यक्ष जी, श्री धरणेन्द्र प्रधान।
जिन भक्तों पर तुम रखो, वरदा दृष्टि महान्॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

संपत् शुक्रवार व्रत पूजन

(नरेन्द्र छंद)

क्षमाशील समता की मूरत, पार्श्वनाथ जिन देवा।
पद्मावती धरणेन्द्र सदा ही, करते प्रभु की सेवा॥
संपत् शुक्रवार का व्रत हम, करते मैया तेरा।
पुष्प लिये हम तुम्हें बुलायें, कर दो धर्म सबेरा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं संपत् शुक्रवार व्रत अधिष्ठात्री हे पद्मावती महादेवी ! अत्रागच्छा-गच्छ, तिष्ठ-तिष्ठ इति आह्वाननं स्थापनम्। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अडिल्ल छंद

श्रीफल माला तांबुल सज्जित कुंभ ले।
चरण धुलाये माँ के ढोल मृदंग ले॥
माता तेरे व्रत में शक्ति अपार है।
तुम पूजा से बढ़ता सुख भंडार है॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं संपत् शुक्रवार व्रत अधिष्ठात्री हे पद्मावती महादेव्यै जलं समर्पयामि स्वाहा।

हल्दी कुंकुम चंदन गंध लगा रहे।
माँ को अर्पण कर सौभाग्य जगा रहे॥ माता..॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं संपत् शुक्रवार व्रत अधिष्ठात्री हे पद्मावती महादेव्यै गंधं समर्पयामि स्वाहा।

अक्षत शालि पुंज धवल मुक्ता लिये।
माता रानी के सन्मुख अर्पण किये॥ माता..॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं संपत् शुक्रवार व्रत अधिष्ठात्री हे पद्मावती महादेव्यै अक्षतं समर्पयामि स्वाहा।

रंग-बिरंगे पुष्प हार हम ला रहे।
तुमको अर्पण कर दरबार सजा रहे।।
माता तेरे व्रत में शक्ति अपार है।
तुम पूजा से बढ़ता सुख भंडार है।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं संपत् शुक्रवार व्रत अधिष्ठात्री हे पद्मावती महादेव्यै पुष्पं समर्पयामि स्वाहा।

छप्पन भोग चढ़ायें जो माता तुम्हें।
धन सुख यश पा आनंद सागर में रमें।। माता..।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं संपत् शुक्रवार व्रत अधिष्ठात्री हे पद्मावती महादेव्यै नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा।

तेरा मंदिर दीपों से चमका दिया।
मानों हमने भाग्य उजाला पा लिया।। माता..।।6।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं संपत् शुक्रवार व्रत अधिष्ठात्री हे पद्मावती महादेव्यै दीपं समर्पयामि स्वाहा।

धूप घटों से महकायें दरबार को।
भूलेंगे ना माँ तेरे उपकार को।। माता..।।7।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं संपत् शुक्रवार व्रत अधिष्ठात्री हे पद्मावती महादेव्यै धूपं समर्पयामि स्वाहा।

मधुर सुगंधित आमादिक फल थाल ले।
जगदम्बा को पूजें हम कर ताल ले।। माता..।।8।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं संपत् शुक्रवार व्रत अधिष्ठात्री हे पद्मावती महादेव्यै फलं समर्पयामि स्वाहा।

अर्घ चढ़ायें करें भव्य श्रृंगार हम।
घूमर गरबा कर बोलें जयकार हम।। माता..।।9।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं संपत् शुक्रवार व्रत अधिष्ठात्री हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

दोहा– जल ले कंचन कुंभ में, करते शांतिधार।
पुष्पाञ्जलि अर्पण करें, और करें जयकार॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र – ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मावती महादेव्यै नमः (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– पार्श्वनाथ भगवान को, वंदन बारम्बार।
पद्मावती माँ की पढ़ें, जयमाला सुखकार॥

शंभु छंद

पारस प्रभु की शासन देवी, धरणेन्द्र प्रिया जो कहलाये।
जो पार्श्व प्रभु को शीश धरे, वो पद्मावती माँ कहलाये॥
माँ ! नाम तुम्हारे अनगिन हैं, व्रत व विधान अतिशायी हैं।
उनमें व्रत संपत् शुक्रवार, अतिश्रेष्ठ शीघ्र फलदायी है॥1॥

सौराष्ट्र देश परिभद्रपुरी, उसमें धर्मात्मा भूप हुआ।
उसकी रानी सब धर्मात्मा, जिनधर्म प्रभाव अनूप हुआ॥
उनकी नगरी में श्रुणुयात, अतिशय दरिद्र व्यापारी था।
रुक्मणि पत्नी बच्चे भूखे, उन सबका जीना भारी था॥2॥

मुनि श्री विजयाभिनंदन का, रुक्मणि को इक दिन दर्श मिला।
उनसे व्रत संपत् शुक्रवार, विधिवत पाकर अति हर्ष मिला॥
इक दिन उसका श्रीमंत भ्रात, नगरी को न्यौता देता है।
हर घर–घर भाई निमंत्रण दे, पर बहना को तज देता है॥3॥

पर बहन भाई से प्रीति रख, बिन बोले पीहर में आई।
भाई ने निंदित वचनों से, बहना की प्रीति ठुकराई॥

अगले दिन बच्चों की हठ से, भाई के घर फिर जाती है।
पर भाई गुस्से में बोला, क्यों बिना बुलाये आती है।।4।।

धुत्कार दिया फटकार दिया, आखिर में धक्का मार दिया।
तब पद्मावती माँ को ध्याकर, रुक्मणि ने हा-हाकार किया।।
तब सपने में पद्मावती ने, रुक्मणि को धीर बंधाया है।
बेटी ! व्रत पूर्ण हुआ तेरा, अब पुण्योदय भी आया है।।5।।

रुक्मणि ने हर्ष चित्त हो तब, मंदिर में प्रभु का दर्श किया।
फिर माँ के सन्मुख जा बैठी, अनचाहे हर्षे आज जिया।।
घर लौटी तब आश्चर्य हुआ, घर धन-वैभव से पूर्ण हुआ।
संतान सुखी व्यापार बढ़ा, भाई का मद चकचूर हुआ।।6।।

अब गीत वाद्य सम्मान सहित, बहना को भाई बुलाता है।
कंचन रत्नों की थाली में, छप्पन पकवान सजाता है।।
पर बहना अपने गहनों पर, छप्पन पकवान चढ़ाती है।
यह दृश्य देख उस भाई के, मन में तब लज्जा आती है।।7।।

अब मन में पश्चाताप सहित, उसकी आँखें भर आती है।
वह भाई बहन के चरण पढ़ा, बहना फिर गले लगाती है।।
इस व्रत की महिमा से उसको, धन-यश-वैभव सम्मान मिला।
व्रत की महिमा सुन राजा भी, व्रत उद्यापन में आन मिला।।8।।

फिर अंत समय सब व्रतियों ने, दीक्षा ले स्वर्ग मोक्ष पाया।
हर भक्त सुखी सम्पन्न बना, जिस जिसने यह व्रत अपनाया।।
श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर का, तुमने उपसर्ग मिटाया था।
कई मुनिराजों आर्याओं का, सतियों का कष्ट मिटाया था।।9।।

आचार्य गुप्तिनंदी गुरु जब, हुमचा में संघ सहित आये।
देवेन्द्रकीर्त्ति भट्टारक तब, स्वागत में गज गुरुकुल लाये॥
गुरु ने जब प्रभु का दर्श किया, माता को आशीर्वाद दिया।
त्रय फूल गिरा पद्माम्बा ने, हर्षित हो अतिशय व्यक्त किया॥10॥

सब तीर्थों व जिनमंदिर में, हे मात ! तुम्हारी प्रतिमा है।
तेरी हर प्रतिमा में अतिशय, घर-घर में तेरी महिमा है॥
आचार्य गुप्तिनंदी गुरु ने, श्री धर्म तीर्थ बनवाया है।
उसमें चौबीस भुजावाली, पद्मा माँ तुझे बिठाया है॥11॥

जो नित तेरा श्रृंगार करे, माँ ! तू उसके भंडार भरे।
जो श्रद्धा से तव गोद भरे, तू उसकी सूनी गोद भरे॥
जो मंत्र तुम्हारा जाप करे, तू उसके सब संताप हरे॥
जो 'आस्था' से नित ध्यान करे, माँ ! तू उसका उत्थान करे॥12॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं स्वायुध वाहन वधू चिन्ह परिवार सहित सर्वरोग-दुःख-संकट-कष्ट-पीड़ा निवारिणी, पुत्र-पौत्र-धन-धान्य, सुख-समृद्धि, विद्या-बुद्धि ऐश्वर्य प्रदायिनी हे पद्मावती महादेवी तुभ्यं जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

गीता छंद

दिल्ली सहित सब देश में, माता तेरा मंदिर बना।
उसमें भी हुमचा तीर्थ में, अतिशय तेरा मन भावना॥
श्री धर्मतीर्थ विराजती, शुचि अष्ट धातुमय तू माँ।
चौबीस कर से कर कृपा, चिंता सदा हरना तू माँ॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

श्री पद्मावती अभिषेक पूजा

(अभिषेक)

मंगलं सर्वलोकेषु मंगलं भवती मंगलं।
मंगलं यक्षिणी पद्मा मंगलां च जिनोत्सवे॥1॥

ॐ ह्रीं श्री पीठस्थापनं करोमि स्वाहा॥ श्री पीठस्थापनम्॥

श्री पार्श्वतीर्थकर शासन देवतायाः।
यक्षामरेंद्र धरणेंद्र प्रियांगनायाः॥
घोरोपसर्ग विजये विहिता सनायाः।
पीठार्चनं परमया विदधामि भक्त्या॥2॥

ॐ ह्रीं श्री पीठार्चनम् करोमि स्वाहा॥ श्री पीठार्चनम्॥

पार्श्वबिंब शिरोभूषां जिनालये निवासिनी।
सम्यंक्त्वं भूषितां पद्मां स्थापयाम्यत्र देवतां॥3॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मावती प्रतिमास्थापनम् करोमि स्वाहा॥ श्री प्रतिमास्थापनम्॥

आहूय पार्श्वजिनशासन देवतां तां।
जैनेन्द्रशासन सुरक्षण दत्तचित्तां॥
प्रक्षालयामि सलिलै मिलितालि वृन्दैः।
सौगन्धिकैः क्रमयुगं ननु प्रासुकेश्च॥4॥

ॐ ह्रीं श्री पादप्रक्षालनं करोमि स्वाहा। श्री पादप्रक्षालनं॥

इन्द्राग्ने यम नैऋतेश्वर मरुद्धे पश्चिमाशेश्वर।
वायव्याख्यदिशेश बोत्तरदिशे शेषान शेषेश्वर॥
सुर्याचन्द्रमसौ दिशांच विदिशां संरक्षकाः सम्मताः।
ये देवा दश ते मया सुविहितां गृह्णन्तु पुर्णाहुतिं॥5॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे दशदिक्पालदेवाः ! इदं अर्घ्यम पाद्यं जलं गंधं अक्षतां पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं यज्ञभागं च यजामहे–यजाहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यतां। अर्घ्यम्।

सलिलेनामलेनाद्य सलीलं स्नापयाम्यहं।
पद्मावतीं महादेवी भक्तिनिर्भर-चेतनः ॥6॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मावती महादेव्या जलस्नपनं करोमि स्वाहा।

शास्त्रायुधा भरणधारिणि देवते त्वाम्।
जैनेन्द्रशासनरतां विमल स्वभावां॥
दुष्कर्म कर्मठ जिनेन्द्रद्विषो विषाभां।
नत्वाऽर्पयामि धरणेन्द्र प्रियांगनेर्घ्यम्॥7॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

शांतिधारा, पुष्पाञ्जलिं

शर्करायां रसेनाहं सुधास्वादजुषा मुदा।
संस्नापयामि यत्पद्मां जायतं मंगलाय तत्॥8॥ शास्त्रायुधाभरण धारिणी।

ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मावती महादेव्या शर्करास्नपनं करोमि स्वाहा।
अर्घ्यं। शांतिधारा। पुष्पांजलिम्।

घृतं गोरोचनाच्छायं पद्मावत्यै समर्पितं।
जायतां भक्तिभाजस्तत्सर्वसौभाग्य सम्पदे॥9॥ शास्त्रयुधाभरण..ऽऽ

ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मावती महादेव्या घृतस्नपन करोमि स्वाहा।
अर्घ्यं। शांतिधारा। पुष्पांजलिम्।

पयोनिभेन पयसा देवीं संस्न्नाप्याम्यहं।
पयोन्धसां यथातृप्त्यै भूयात्तोषाय मे तथा॥10॥ शास्त्रायुधाभरण..ऽऽ

ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मावती महादेव्या क्षीरस्नपनं करोमि स्वाहा।
अर्घ्यं। शांतिधारा। पुष्पांजलिम्।

पद्मां पद्माप्रभां देवीं पद्मपत्र निभांबका।
अंबिका स्नापयामीहामुध दग्धा सुखाप्तये॥11॥ शास्त्रायुधाभरण..ऽऽ

ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मावती महादेव्या दधिस्नपनं करोमि स्वाहा।
अर्घ्यं। शांतिधारा। पुष्पांजलिम्।

सर्वविघ्न विनाशाय क्षेमायारोग्य सम्पदे।
गन्धाम्बु धारया देवीं शान्त्यै संस्नापयाम्हम्॥12॥ शास्त्रायुधाभरण..ऽऽ
ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मावती महादेवी सर्वविघ्न विनाशनि सर्वक्षाम–डामरविनाशनि सर्वरोगापमृत्युविनाशनि सर्वोपद्रव विनाशनि सर्वशांतिं कुरु कुरु, तुष्टिं कुरु कुरु, पुष्टिं कुरु कुरु, सर्वसौभाग्यमिष्ट सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा। गन्धोदकस्नपनम्॥ अर्घ्यं। शांतिधारा। पुष्पांजलिम्।

सुरेन्द्र वृन्दवन्दित क्रमाब्ज द्वन्द्वतीर्थकृत्–
पार्श्वनाथ शत्रु दैत्यराजदर्पं मर्दनम्॥
पार्श्वनाथ पद्मतुल्य पादद्वन्द्वसेविनं।
नानमौमि श्रीजिनेश शासने रतं सुरम्॥13॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं धरणेन्द्र देवायार्घ्यम्।

जाप्य मंत्र– ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मावत्यै नमः (9, 27, 108 बार जाप करें)

अद्भुत मालामंत्र

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय, धरणेंद्र पद्मावती सहिताय, कलिकुंडदंडाधीश्वराय, वज्रदंडाय, राजचौरारिमारि भय विनाशनाय, माटकूट चौडि–क्षुद्र–व्याधि–कुचेष्टा कुंचिभाय परमंत्रानुच्चाट्य छिंद–छिंद, भिंद–भिंद, स्फोटय–स्फोटय, घातय–घातय ह्रम्ल्व्यूं क्ष्म्ल्व्यूं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः धनु–धनु, कंप–कंप, शीघ्रं–शीघ्रं, अवतर–अवतर, आगच्छ–आगच्छ, एहि–एहि, त्रैलोक्य–वार्तास्वरूपं कथय–कथय, य्म्ल्व्यूं, रम्ल्व्यूं, लम्ल्व्यूं, व्म्ल्व्यूं, श्म्ल्व्यूं–ष्मल्व्यूं–स्मल्वर्यूं–ह्मल्व्यूं सहस्रकोटि देवराजग्रहान् उच्चाटय–उच्चाटय, नवकोटि गंधर्व राजग्रहान उच्चाटय–उच्चाटय, अष्ट कोटि यक्ष ग्रहान् उच्चाटय–उच्चाटय, सप्तकोटि भूतग्रहान् उच्चाटय–उच्चाटय, षट् कोटि प्रेत ग्रहान् उच्चाटय–उच्चाटय, पंचकोटि पिशाचग्रहान् उच्चाटय–उच्चाटय, चतुष्कोटिब्रह्म राक्षसग्रहान् उच्चाटय–उच्चाटय, त्रिकोटि अपस्मारग्रहान् उच्चाटय–उच्चाटय, द्विकोटि अष्टकुल नागग्रहान् उच्चाटय–उच्चाटय, एककोटि हरिहर ब्रह्मादि ग्रहान् उच्चाटय–उच्चाटय, पूर्व द्वारं बंध–बंध, अग्नि द्वारं बंध–बंध, यमद्वारं बंध–बंध, नैऋत्यद्वारं बंध–बंध, वरुणद्वारं बंध–बंध, वायव्य द्वारं बंध–बंध, कुबेरद्वारं बंध–बंध, ईशान्यद्वारं बंध–बंध, ब्रह्मद्वारं बंध–बंध, अधोद्वारं बंध–बंध, ऊर्ध्व द्वारं बंध–बंध, शत्रु गतिमाति प्राण बंध–बंध, अनंतकोटि परविद्यां छेदय–छेदय, आत्मविद्यां पूजय–पूजय, एकाहिक, द्वयाहिक, त्रयाहिक, चातुर्थिक,

नित्य ज्वरं, रात्रिज्वरं–मध्याह्न ज्वरं–वेलाज्वरं–छिंद–छिंद, भूतज्वरं छिंद–छिंद, प्रेतज्वरं छिंद–छिंद, पिशाच ज्वरं छिंद–छिंद, ब्रह्मराक्षसज्वरं छिंद–छिंद, वातज्वरं छिंद–छिंद, पित्तज्वरं छिंद–छिंद श्लेष्मज्वरं छिंद–छिंद, मोहिनीज्वरं छिंद–छिंद, सर्वविषमज्वरं छिंद छिंद।

मंत्र– ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं क्ष्म्ल्वर्यूं हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रम्ल्व्र्यूं अभिमुखं रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं भ्म्ल्वर्यूं शिखां रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं म्म्ल्व्र्यूं वज्र कवचं रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं इम्ल्वर्यूं (..नामदेवतस्य) सर्वदुष्ग्रहं निवारय–निवारय श्री पार्श्वनाथ धरणेन्द्र–पद्मावती आज्ञापयति स्वस्थाने गच्छ–2 जः जः जः स्वाहा।

विधि – इस मंत्र को प्रातः एक बार स्मरण करके अपने सम्पूर्ण शरीर का स्पर्श करें। फिर घर से निकलें। व्यापार आदि अनेक शुभ कार्य के लिए तो सुरक्षा कार्य करेगा। मंत्रित जल पिलाने से बाधायें भी दूर हो जाती हैं।

अथ पद्मावती माला मंत्र
(स्वयं सिद्ध मंत्र)

ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय सर्वलोक हृदयानन्द–कारिणी, सर्वलोकाभ्युदय–कारिणी, भृंगीदेवी सर्वसिद्धविद्या बुधायिनी, कालिका सर्व विद्या–मंत्र–यंत्र–मुद्रा–स्फोटना, कराली सर्वपरद्रव्य योग चूर्ण रक्षणा जभाषरं मौन्य मर्दिनी, नमो दानद रोगनाशिनी, सकल–त्रिभुवनानंदकारिणी, भृंगीदेवी सर्वसिद्ध विद्या–बुधाइणी महामोहिनी, त्रैलोक्य–संहार–कारिणी, चामुण्डा। ॐ नमो भगवति पद्मावति सर्वग्रह निवारय फट्–फट्, कंप–कंप, शीघ्रं चालय–चालय, गात्रं चालय–चालय, पादं चालय–चालय, सर्वांगं चालय–चालय, लोलय–लोलय, धनु–धनु, कंपय–कंपय, कंपावय–कंपावय, सर्व दुष्टान्विनाशन ! जये विजये ! अजिते ! अपराजिते ! जंभे ! मोहे ! अजिते। ह्रीं–ह्रीं, हन–हन, दह–दह, पच–पच, धम–धम, चल–चल, चालय–चालय, आकर्षय–आकर्षय, आकम्पय–आकम्पय, विकम्पय–विकम्पय, क्ष्म्ल्वर्यूं क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः फट्–फट्, निग्रहं ताडय–ताडय, ब्लूव्यूं स्त्रां स्त्रीं ह्रूं क्रौं क्षः–2, हं हं सं सं ध ध स स म्म्ल्व्र्यूं ह ह, घर– ॐ ह्रां ह्रीं भ्रूं भ्रूं भंगसंग भृकुटी पुटतट भासितोद्दाम दैत्ये स्त्रां स्त्रीं प्रचंडे ! स्तुति शत मुखरे ! रक्ष मां देवि पद्मे–पद्मे पर–पर कर–कर। ॐ फट्–फट्–फट् शंख मुद्रया मारय–मारय,

ग्रण्हाय–ग्रण्हाय, क्ष्म्ल्व्र्यूं हर–हर, स्तुतिकामुद्रा ताडय–ताडय, र्स्म्ल्व्र्यूं रषरा प्रज्वल–प्रज्वल, प्रज्वालय–प्रज्वालय, धूमांधकारिणी रां–रां, प्रां–प्रां, क्लीं–क्लीं, हः व नंद्यावर्तु मुद्रया त्रासय–त्रासय, परमत्रं त्रासय–त्रासय, भ्म्ल्व्र्यूं खचक्र मुद्रया छिंद–छिंद, भ्म्ल्व्र्यूं गः त्रिशूल मुद्रया छेदय–छेदय, परमंत्रंभेदय–भेदय, ह्म्ल्व्र्यूं, धम–धम, बंधय–बंधय, मोचय–मोचय, हल मुद्रया द्रावय–द्रावय, व–व, यं कुरू–कुरू, क्ल्व्र्यूं प्रां प्रूं प्रौं प्रः समुद्रे मज्झ–मज्झ, ब्म्ल्व्र्यूं छ्रां छ्रीं छ्रौं छ्रः मंत्रालि छेदय–छेदय, परसैन्य–मुच्चाटय–मुच्चाटय, पररक्षां क्षः त्रकुत्र फट्–फट् परसौन्यं विध्वंसय–विध्वंसय, मारय–मारय, दारय–दारय, विदारय–विदारय, गति–स्तम्भय–2, भ्म्ल्व्र्यूं भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः श्रवप–श्रवप, य्म्ल्व्र्यूं यः प्रेषय–2, पंछेदय–पंछेदय, विद्वेषय–विद्वेषय, स्म्ल्व्र्यूं स्त्रा–स्त्रीं स्त्रावय–स्त्रावय, मम रक्षां रक्ष–रक्ष, परमंत्र क्षोम–क्षोम, छेद–छेद, छेदय–छेदय, भेद–भेद, भेदय–भेदय, सर्व जंभं स्फोटय–स्फोटय, भ–भ, म्म्ल्व्र्यूं म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः जामय–जामय, स्तंभय–स्तंभय, दुःखय–दुःखय, रवाय–रवाय, रक्ल्व्र्यूं ब्रां ब्रीं ब्रूं ब्रौं ब्रः हा ग्रीवां भांजय–भांजय, मोहय–मोहय, त्म्ल्व्र्यूं त्रां त्रीं त्रूं त्रौं त्रः– त्रासय–त्रासय, नाशय–नाशय, क्षोभय–क्षोभय, सः–2, सर्वदिशि बंधय–बंधय, सर्वविघ्न छेदय–छेदय, निकृंतय–निकृंतय, सर्वदुष्टान् ग्राहय–ग्राहय, सर्वयंजान् स्फोटय–स्फोटय, सर्व श्रृंखलान् त्रोटय–त्रोटय, मोय्य–मोय्य, सर्वदुष्टान् आकर्षय ह्म्ल्व्र्यूं ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः शांतिं कुरु–कुरु, तुष्टिं कुरु–कुरु, स्वस्तिं कुरु–कुरु, ॐ क्रौं ह्रीं ह्रौं पद्मावती आगच्छय–आगच्छय, सर्वभयं मम रक्ष–रक्ष, सर्वसिद्धिं कुरु–कुरु, सर्वरोगं–नाशय–नाशय, किन्नरकिंपुरुषगरुड–गन्धर्व–यक्ष–राक्षस–भूतप्रेत–पिशाच–वैताल–रेवती–दुर्गा–चंडी–कुष्मांडिनी बांध सरय–सरय, सर्वशाकिनी मर्दय–मर्दय, संयोगिनी गणं चुरय–चुरय, नृत्य–नृत्य, गाय–गाय, कल–कल, किली–किली, हिलि–हिलि, मिलि–मिलि, सुलु–सुलु, घुलु–घुलु, कुलु–कुलु, पुरु–पुरु, अस्माकं वरदे पद्मावती हन–हन, दह–दह, पच–पच, सुदर्शन चक्रेण छिंद–छिंद, ह्रीं क्लीं ह्रां ह्रीं स्त्रूं द्रूं भ्रूं प्रूं ॐ ग्लीं प्लीं स्त्रां श्रीं वां भ्रीं ह्रीं–2, पां–पां, प्रीं–प्रीं, हां–हां, पद्मावती धरणेन्द्र प्रसादयाति स्वाहा। एषः मंत्रः पठितः सिद्धः निरंतरं स्मर्यमाणेन सूतग्रह–ब्रह्म–राक्षस–वैताल–प्रभृति शाकिनी–ज्वर रोग चोरारिमारिनिग्रह व्याल–व्याघ्र सर्व–वृश्चिक–मूषक–लूत–पातकं च शिर रोगो नाशयति।

***

पद्मावतीदेवी अष्टोत्तरशतनाम बीजाक्षर मन्त्रा:

(उदाहरण के लिये- 1 ॐ आं क्रों ह्रीं श्री महादेव्यै नम: स्वाहा।)

1. महादेव्यै
2. कल्याण्यै
3. भुवनेश्वर्यै
4. चंडै
5. कात्यायिन्यै
6. गौर्यै
7. जिनधर्मपरायण्यै
8. पंचब्रह्मपदाराध्यै
9. पंचमन्त्रोपदेशिन्यै
10. पंचव्रतगुणोपेते
11. पंचकल्याणदर्शिनी
12. स्तोतलायै
13. नित्यायै
14. त्रिपुरायै
15. काम्यसाधिन्यै
16. मदनोन्मादिन्यै
17. विद्यायै
18. महालक्ष्म्यै
19. सरस्वत्यै
20. सारस्वतायै
21. गणाधीशायै
22. सर्वशास्त्रोपदेशिन्यै
23. सर्वेश्वर्यै
24. महादुर्गायै
25. त्रिनेत्रायै
26. फणिशेखरायै
27. जटा वालेंदुमकुटायै
28. कुक्कुटोरगवाहिन्यै
29. चतुर्मुख्यै
30. महापद्मायै
31. धनदेव्यै
32. गुह्येश्वर्यै
33. नागराजमहापत्न्यै
34. नागिण्यै
35. नागदेवतायै
36. सिद्धान्तसम्पन्नायै
37. द्वादशांगपरायण्यै
38. चतुर्दशमहाविद्यायै
39. अवधिज्ञानलोचनायै
40. वासन्त्यै
41. वनदेव्यै
42. वनमालायै
43. महेश्वर्यै
44. महाघोरायै
45. महारौद्रायै
46. भीतमुत्यै
47. भयंकर्यै
48. कंकाल्यै
49. कालरौद्रायै
50. गंगायै
51. गांधर्वनायक्यै
52. सम्यग्दर्शन संशुद्धायै
53. सम्यग्ज्ञानपरायण्यै
54. सम्यक्चारित्रसम्पन्नायै
55. नराणामुपकारिण्यै
56. अगण्यपुण्यसम्पन्नायै
57. गणन्यै
58. गणनायक्यै
59. पाताळवासिन्यै
60. पद्मयै
61. पद्मास्यायै
62. पद्मलोचनायै
63. प्रज्ञप्त्यै
64. रोहिण्यै
65. जृंभायै
66. स्तंभायै
67. स्तंभिन्यै
68. मोहिन्यै
69. योगिन्यै
70. योगविज्ञान्यै
71. मृत्युदारिद्रभंजिन्यै
72. क्षमासम्पन्नधरण्यै
73. सर्वतीर्थनिवासिन्यै
74. ज्वालामुख्यै
75. महाज्वालामालिन्यै
76. वज्रश्रृंखलायै
77. नागपाशधरायै
78. धौर्यै
79. श्री श्रोणीतालफलान्वितायै
80. हस्तायै

81. प्रशस्तायै 82. विद्यार्यायै 83. हस्तिन्यै
84. हस्तिवाहिन्यै 85. वासंत लक्ष्म्यै 86. गीर्वाण्यै
87. सर्वाण्यै 88. पद्मविष्टरायै 89. बालार्कवर्णसङ्काशायै
90. श्रृंगार रस नायक्यै 91. अनेकांतात्म तत्वज्ञायै 92. चिंतितार्थफलप्रदायै
93. चिंतामण्यै 94. कृपायै 95. पूर्णायै
96. पापारंभविमोचिन्यै 97. कल्पवल्लीसमाकारायै
98. कामधेन्वै 99. शुभंकारायै 100. सद्धर्मवत्सलायै
101. सार्वास्यै 102. सद्धर्मोत्सव वर्धिन्यै 103. सर्वपाप प्रशमिन्यै
104. सर्वरोगनिवारिण्यै 105. गम्भीरायै 106. मोहिन्यै
107. सिद्धायै 108. स्वेपालितरुवासिन्यै।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

महादेवी स्वेपालित माता, अष्टोत्तर शत नामा।
इन नामों को जो नित जपता, पाये सुख अभिरामा॥
अष्टोत्तर शत नाम मात के, जो श्रद्धा से ध्यायें।
उनके सर्वकार्य सिद्धी हो, मिटें सभी बाधायें॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महादेव्यादि स्वेपालितरुवासिन्यंत अष्टोत्तर शत शुभ नामधारिण्यै पद्मावती महादेव्यै दिव्य महार्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

॥ शांतिधारा॥ पुष्पांजली॥

(शार्दूलिका छंद)

अष्टोत्तर शतं नाम रत्न मूलांक मालिकां।
त्रिसंध्यं पठते नित्यं दा पाप दारिद्य नाशनं॥
दिव्याष्टकं त्रिसंध्यायां ध्यान पूजा जपान्वितं।
नामांकमालिका स्तोत्रं यः पठेत् वांछितं भवेत्॥1॥

(शार्दूलविक्रीड़ित छंद)

दिव्य स्तोत्रमिदं महा भय हरं पापौघ संहारकं।
भूत-प्रेत पिशाच राक्षस भयं विध्वंसकं संततं॥
अन्येनार्पित वांछितस्य निलयं सर्वापमृत्युंजयं।
देव्याः प्रीतिकरं कवित्व जनकं स्तोत्रं कृतं मंगलं॥2॥

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्

पद्मावती सहस्त्रनाम

पद्मावती सहस्त्र नाम पढ़ें प्रत्येक शतक के बाद कोठे पर शतक समाप्ति का अर्घ चढ़ावें। प्रत्येक नाम के साथ कुंकुम व पुष्प अलग थाली में चढ़ावें चाहे तो अर्घ्य भी चढ़ा सकते हैं लेकिन 1008 अर्घ्य चढ़ाने पड़ेंगे। उसके बाद 108 अर्घ्य कोठे पर चढ़ावें।

महादेवी के नाम से पहले ''**ॐ ह्रीं अर्हं**'' ये बीजाक्षर एवं अन्त में ''**नमः**'' शब्द अर्चन करते समय प्रत्येक नाम के साथ जोड़ लेवें।

(उदाहरणार्थ : 1. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मावत्यै नमः।)

पद्मावत्यादि शतं

1. पद्मावत्यै	2. पद्मवर्णायै	3. पद्महस्तायै
4. पद्मिन्यै	5. पद्मासनायै	6. पद्मकर्णायै
7. पद्मास्यायै	8. पद्मलोचनायै	9. पद्मायै
10. पद्मदलाक्ष्यै	11. पद्मवनस्थितायै	12. पद्मालयायै
13. पद्मागन्धायै	14. पद्मरागायै	15. उपरागिकायै
16. पद्मप्रियायै	17. पद्मनाभ्यै	18. पद्माँग्यै
19. पद्मशायिन्यै,	20. पद्मवर्गवत्यै	21. पूतायै
22. पवित्रायै	23. पापनाशिन्यै	24. प्रभावत्यै
25. प्रसिद्धायै	26. पार्वत्यै	27. पुरवासिन्यै
28. प्रज्ञायै	29. प्रह्लादिन्यै	30. प्रीतायै
31. पीतामायै	32. पद्माम्बिकायै	33. पातालवासिन्यै
34. पूर्णायै	35. पद्मयोन्यै	36. प्रियंवदायै
37. प्रदीप्तायै	38. पाशहस्तायै	39. परायै
40. पारायै	41. परम्परायै	42. पिंगलायै
43. परमायै	44. पूरायै	45. पिंगायै
46. प्राच्यै	47. प्रतीचिकायै	48. परकार्यपिरायै
49. प्रथ्व्यै	50. पार्थिव्यै	51. प्रथिवीपत्यै
52. पल्लवायै	53. प्राणदायै	54. पात्रायै
55. पवित्रांग्यै	56. पूतनायै	57. प्रभायै

58. पताकिन्यै 59. पीतायै 60. पन्नगाधिपशेखरायै
61. पताकायै 62. पद्मकटिन्यै 63. पतिमान्यायै
64. पराक्रमायै 65. पादाम्बुजधरायै 66. पुष्टायै
67. परमागमबोधिन्यै 68. परमात्मायै 69. परमानन्दायै
70. प्रसन्नायै 71. पात्रपोषिण्यै 72. पंचबाणगत्यै
73. पौत्र्यै 74. पाखंडध्नन्यै 75. पितामह्यै
76. प्रहेलिकायै 77. प्रत्यंचायै 78. प्रथुपापौघनाशिन्यै
79. पूर्णचन्द्रमुख्यै 80. पुण्यायै 81. पुलोमायै
82. पूर्णिमायै 83. प्रथायै 84. पाविन्यै
85. परमानन्दायै 86. पंडितायै 87. पंडितेडितायै
88. प्रांशुलभ्यायै 89. प्रमेयायै 90. प्रमायै
91. प्राकारवर्तिन्यै 92. प्रधानायै 93. प्राथितायै
94. प्रार्थ्यायै 95. पटुदायै 96. पक्तिपूरण्यै
97. पातालस्थायै 98. पातालेश्वर्यै 99. प्रणायै
100. प्रेयस्यै नमः।

अर्घ्य (नरेन्द्र छंद)

पद्मावती से प्रेयस्यै तक, शत नामों को ध्यायें।
हल्दी कुंकुम व गुलाब ले, माता तुम्हें चढ़ायें॥
सहस्र नाम पद्मावती माँ के, जो श्रद्धा से ध्यायें।
उनके सर्वकार्य सिद्धी हो, मिटें सभी बाधायें॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अर्हं पद्मावत्यादि प्रेयस्यंत्यशतनामधारिण्यै पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा॥ शांतिधारा, पुष्पांजलि॥

महाज्योतिष्मत्यादि शतं

1. महाज्योतिष्मत्यै 2. मात्रै 3. महायै
4. मायायै 5. महासत्यै 6. महादीप्तयै
7. मत्यै 8. मित्रायै 9. महाचन्द्र्यै
10. मंगलायै 11. महिष्यै 12. मानस्यै
13. मेघायै 14. महालक्ष्म्यै 15. मनोहरायै

16. मदापहारिण्यै
17. मृग्यायै
18. मानिन्यै
19. मानशालिन्यै
20. मार्गदात्र्यै
21. मुहूर्तायै
22. माध्व्यै
23. मधुमत्यै
24. मह्यै
25. महेश्वर्यै
26. महेज्यायै
27. मुक्ताहारविभूषिण्यै
28. महामुद्रायै
29. मनोज्ञायै
30. महाश्वेतायै
31. अतिमोहिन्यै
32. मधुप्रियायै
33. मह्यायै
34. मायायै
35. मोहघ्न्यै
36. मनस्विन्यै
37. माहिष्मत्यै
38. महावेगायै
39. मानदायै
40. मानहारिण्यै
41. महाप्रभायै
42. मदनायै
43. मंत्रवश्यायै
44. मुनिप्रियायै
45. मंत्ररूपायै
46. मंत्रज्ञायै
47. मंत्रदायै
48. मंत्रसागरायै
49. मन: प्रियायै
50. महाकायायै
51. महाशीलायै
52. महाभुजायै
53. महाशयायै
54. महारक्षायै
55. मनोभेदायै
56. महाक्षमायै
57. महाकान्तिधरायै
58. मुक्तायै
59. महाव्रतसहायिन्यै
60. मधुस्रवायै
61. मूर्च्छनायै
62. मृगाक्ष्यै
63. मृगावत्यै
64. मृणालिन्यै
65. मन:पुष्टयै
66. महाशक्त्यै
67. महार्थदायै
68. मूलाधारायै
69. मूडाण्यै
70. मत्तायै
71. मांतगगामिन्यै
72. मंदाकिन्यै
73. महाविद्यायै
74. मर्यादायै
75. मेघमालिन्यै
76. मात्रे
77. मातामह्यै
78. मंदगत्यै
79. महाकेश्यै
80. महीधरायै
81. महोत्साहायै
82. महादेव्यै
83. महिलायै
84. मानवर्द्धिन्यै
85. महाग्रहायै
86. महाहरायै
87. महामायै
88. मोक्षमार्गप्रकाशिन्यै
89. मान्यायै
90. मानवत्यै
91. मान्यै
92. मणिनूपुरशोभिन्यै
93. मणिकान्तिधरायै
94. मीनायै
95. महामतिप्रकाशिन्यै
96. महातन्त्रायै
97. महादक्षायै
98. मेघायै
99. मुग्धायै
100. महागुणायै।

अर्घ्य (नरेन्द्र छंद)

महाज्योतिषमति नामा शत-शत, अंतिम महागुणायै।
कुंकुम हल्दी व गुलाब ले, मंगल जाप रचायें।।
सहस्र नाम पद्मावती माँ के, जो श्रद्धा से ध्यायें।
उनके सर्वकार्य सिद्धी हो, मिटें सभी बाधायें।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं महाज्योतिष्मत्यादिमहागुणायै शतनाम धारिण्यै पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।2।। शांतिधारा, पुष्पांजलि।।

जिनमात्रादि शतं

1. जिनमात्रै	2. जिनेन्द्रायै	3. जयंत्यै
4. जगदीश्वर्यै	5. जेयायै	6. जयवत्यै
7. जायायै	8. जनन्यै	9. जनपालिन्यै
10. जगन्मात्रै	11. जगन्मायायै	12. जगज्ज्योतिषै
13. जगज्जितायै	14. जागरायै	15. जर्जरायै
16. जेत्र्यै	17. जमुनायै	18. जलवासिन्यै
19. योगिन्यै	20. योगमूलायै	21. जगद्धात्र्यै
22. जगद्धरायै	23. योगपट्टधरायै	24. ज्वालायै
25. ज्योतिरूपायै	26. ज्वालिन्यै	27. ज्वालामुख्यै
28. ज्वालामालायै	29. जाज्वल्यायै	30. जगद्धितायै
31. जैनेश्वर्यै	32. जिनाधारायै	33. जीवन्यै
34. यश:पालिन्यै	35. यशोदायै	36. ज्यायस्यै
37. ज्येष्ठायै	38. ज्योत्स्नायै	39. ज्वरनाशिन्यै
40. ज्वरलोपायै	41. जराजीर्णायै	42. जाँगुलाऽमयतर्जिन्यै
43. युगभद्रायै	44. जगन्मित्रायै	45. यंत्रिण्यै
46. जनभूषणायै	47. योगेश्वर्यै	48. योगांगायै
49. योगयुक्तायै	50. युगादिजायै	51. यथार्थवादिन्यै
52. जांबूनदकान्तिधरायै	53. जयायै	54. निमेषायै
55. नर्तिन्यै	56. तायै	57. नारायण्यै
58. निर्मदायै	59. नीलात्मिकायै	60. निराकारायै

61. निराधारायै 62. निराश्रयायै 63. नृपवश्यायै
64. निरामान्यायै 65. नि:संगायै 66. नृपनंदिन्यै
67. नृपधर्ममय्यै 68. नीत्यै 69. नूतन्यै
70. नरपलिन्यै 71. नंदायै 72. नन्दवत्यै
73. निष्ठायै 74. नीरदायै 75. नाग वल्लभायै
76. नृत्यप्रियायै 77. नन्दिन्यै 78. नित्यायै
79. नैकायै 80. निरामयायै 81. नागपाशधरायै
82. नौकायै 83. निष्कलंकायै 84. निरागसायै
85. नागवल्लयै 86. नागकन्यायै 87. नागिन्यै
88. नागकुण्डल्यै 89. निद्रायै 90. नागदमन्यै
91. नेत्र्यै 92. नाराचवर्पिण्यै 93. निर्विकारायै
94. निवैरायै 95. नागनाथायै 96. नागकल्पभायै
97. नागस्वामिन्यै 98. नागरमण्यै 99. निर्लोभायै
100. नित्या नन्दविधायिन्यै।

अर्घ्य (नरेन्द्र छंद)

जिनमात्रे तायै नागिन्यै, नित्यानंद विधायी।
हल्दी कुंकुम रक्त पुष्प की, हमने थाल चढ़ायी॥
सहस्र नाम पद्मावती माँ के, जो श्रद्धा से ध्यायें।
उनके सर्वकार्य सिद्धी हो, मिटें सभी बाधायें॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं जिनमात्रादिनित्यानंदविधायिनी शत् नाम धारिण्यै पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥3॥ शांतिधारा, पुष्पांजलि॥

वज्रहस्तादि शतं

1. वज्रहस्तायै 2. वरदायै 3. वज्रशीलायै
4. वरुथिन्यै 5. वज्रायै 6. वज्रायुधायै
7. वाण्यै 8. विजयायै 9. विश्वव्यापिन्यै
10. वसुदायै 11. बलदायै 12. वीरायै
13. विषयायै 14. विषमार्दिन्यै 15. वसुंधरायै

16. वरायै
17. विश्वायै
18. वर्णिन्यै
19. वायुगामिन्यै
20. बहुवर्णायै
21. बीजवत्यै
22. विद्यायै
23. बुद्धिमत्यै
24. विभायै
25. वेधायै
26. वामवत्यै
27. वामायै
28. विनिद्रायै
29. वंशभूषणायै
30. वरारोहायै
31. विशोकायै
32. वेदरूपायै
33. विभूषणायै
34. विशालायै
35. वारुण्यै
36. वल्यायै
37. बालिकायै
38. बालकप्रियायै
39. वर्तिन्यै
40. विषध्यै
41. बालायै
42. विविक्तायै
43. वनवासिन्यै
44. वंद्यायै
45. विधिसुतायै
46. वेलायै
47. विश्वयोन्यै
48. बुधप्रियायै
49. बलदायै
50. वीरमात्रे
51. वीरस्वै
52. वीरनन्दिन्यै
53. वरायुधधरायै
54. वेषायै
55. वारिदायै
56. बलशालिन्यै
57. बुद्धमात्रै
58. वैद्यमात्रै
59. बंधुरायै
60. बंधुरुपिण्यै
61. विद्यावत्यै
62. विशालाक्ष्यै,
63. वेदमात्रै
64. विभाश्वर्यै
65. वात्याल्यै
66. विषमायै
67. वीशायै
68. वेदवेदांगधारिण्यै
69. वेदमार्गरतायै
70. व्यक्तायै
71. विलोमायै
72. वादशालिन्यै
73. विश्वमात्रै
74. विषकायै
75. वंशजायै
76. विश्वदीपिकायै
77. वसंतरूपिण्यै
78. वर्षायै
79. विमलायै
80. विविधायुधायै
81. विज्ञानिन्यै
82. विपाशायै
83. विपंच्यै
84. वधमोक्षिण्यै
85. विश्वरूपवत्यै
86. वृद्धायै
87. विनीतायै
88. विशिखाविभायै
89. व्यालिन्यै
90. व्याललीलायै
91. व्याप्तव्याधिविनाशिन्यै
92. विमोहायै
93. वाणसंदोहायै
94. वर्द्धिन्यै
95. वर्द्धमानकायै
96. व्यालेश्वरप्रियायै
97. प्राणप्रेयस्यै
98. वसुदायिन्यै
99. विश्वेश्वर्यै
100. व्यन्तरेन्द्रीवरदात्र्यै।

अर्घ्य (नरेन्द्र छंद)

मात वज्रहस्ता से लेकर, व्यन्तरेन्द्रीवर माता।
सौ नामों पर पुष्प चढ़ाकर, मैं नित अर्घ चढ़ाता॥
सहस्र नाम पद्मावती माँ के, जो श्रद्धा से ध्यायें।
उनके सर्वकार्य सिद्धी हो, मिटें सभी बाधायें॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हस्तादि–व्यन्तरेन्दीवरदात्र्यंशत नाम धारिण्यै पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥4॥ शांतिधारा, पुष्पांजलि॥

कामदादि शतं

1. कामदायै	2. कमलायै	3. काम्यायै
4. कामांगायै	5. काम्यसाधिन्यै	6. कलावत्यै
7. कलापूर्णायै	8. कलाधरायै	9. कनीयस्यै
10. कामिन्यै	11. कमनीयांगायै	12. कनककांचन सन्निभायै
13. कात्यायन्यै	14. कान्तिदायै	15. केवलायै
16. कामरुपिण्यै	17. कानीनायै	18. कमलामोदायै
19. कम्रायै	20. कान्तायै	21. करप्रियायै
22. कायस्थायै	23. कालिकायै	24. काल्यै
25. कुमार्यै	26. कालरुपिण्यै	27. कालायै
28. कारायै	29. कामधेन्वै	30. कास्यै
31. कमललोचनायै	32. कुन्तलायै	33. कनकाभायै
34. काश्मीरकुंकुमप्रियायै	35. कृपावत्यै	36. कुण्डलिन्यै
37. कुण्डलाकरशायिन्यै	38. कर्कशायै	39. कोमलायै
40. काष्ठायै	41. कौलिक्यै	42. कुलबालिकायै
43. कालचक्रधरायै	44. कल्पायै	45. कलिकायै
46. काम्यकारिण्यै	47. कविप्रियायै	48. कौशाम्ब्यै
49. कारिण्यै	50. कोषवर्द्धिन्यै	51. कुशावत्यै
52. करालाभायै	53. कौशस्थायै	54. कान्तिवर्द्धिन्यै
55. कादम्बर्यै	56. कोशधरायै	57. कोशाक्ष्यै

58. कौशवासिन्यै 59. कलिध्न्यै 60. कालहनन्यै
61. कौमार्ये 62. कुलजायै 63. कृत्यै
64. कैवल्यदायिन्यै 65. केकायै 66. कर्मधन्यै
67. कालवर्जिन्यै 68. कलंकरहितायै 69. कन्यायै
70. करुणालयवासिन्यै 71. कर्पूरामोदनि:श्वासयै 72. कामबीजवत्यै
73. कल्यै 74. कुलीनायै 75. कुन्दपुष्पाभायै
76. कुक्कुटोरगवाहिन्यै 77. कलिप्रियायै 78. कामवाणायै
79. कमठोपरिशानिन्यै 80. कठोरायै 81. कठिनायै
82. क्रूरायै 83. कन्दलायै 84. कदलीप्रियायै
85. क्रोधिन्यै 86. क्रोधरुपायै 87. चक्रहुँकारवर्तिन्यै
88. कम्बोजिन्यै 89. काण्डरुपायै 90. कोदण्डकरधरिण्यै
91. कुहुक्रीडावत्यै 92. क्रीडायै 93. कुमारानंददायिन्यै
94. कुतूहलायै 95. केतुरुपायै 96. केतक्यै
97. कमलासनायै 98. कोपिन्यै 99. कोपरुपायै
100. कुसुमावासवासिन्यै।

अर्घ्य (नरेन्द्र छंद)

कामदायै से कुसुमवास तक, शत नामों को ध्याता।
सौ नामों को पुष्प चढ़ा मैं, कुंकुम साथ चढ़ाता।।
सहस्र नाम पद्मावती माँ के, जो श्रद्धा से ध्यायें।
उनके सर्वकार्य सिद्धी हो, मिटें सभी बाधायें।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कामदादि कुसुमावास वासिन्यन्तशतनाम धारिण्यै पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।5।। शांतिधारा, पुष्पांजलि।।

सरस्वत्यादि शतं

1. सरस्वत्यै 2. शरण्यै 3. सहस्राक्ष्यै
4. सरोजगायै 5. शिवायै 6. सत्यै
7. सुधारुपायै 8. शिवमायायै 9. सितायै
10. शुभायै 11. सुमेधायै 12. सुमुख्यै
13. सत्यायै 14. सावित्र्यै 15. सामगायिन्यै

16. सुरोत्तमायै 17. सुप्रभायै 18. श्रीरुपायै
19. शास्त्रशालिन्यै 20. शान्तायै 21. सुलोचनायै
22. साध्व्यै 23. सिद्धसाध्यायै 24. सुधात्मिकायै,
25. शारदायै 26. सरलायै 27. सारायै
28. सुवेण्यै 29. सुयशःप्रदायै 30. शंकायै
31. शमतायै 32. शुद्धायै 33. शक्रमान्यायै
34. शुभंकर्यै 35. सुधाहाररतायै 36. श्मायायै
37. शमायै 38. शीलवत्यै 39. शरायै
40. शीतलायै 41. सुभगायै 42. साव्यै
43. सुकेश्यै 44. शैलवासिन्यै 45. शालिन्यै
46. साक्षिण्यै 47. सोमायै 48. सुभिक्षायै
49. शिवप्रेयस्यै 50. सुवर्णायै 51. शोणवर्णायै
52. सुन्दर्यै 53. सुरसुन्दर्यै 54. शक्त्यै
55. सुषायै 56. शौरिकायै 57. सेव्यायै
58. श्रियै 59. सुजनार्चितायै 60. शिवदूत्यै
61. श्वेतवर्णायै 62. शुभ्राभायै 63. शोभनाशिखायै
64. सिंहिकायै 65. सकलायै 66. शोभायै
67. स्वामिन्यै 68. शिवपोषिण्यै 69. श्रेयस्कर्यै
70. श्रेयस्यै 71. शौर्यै 72. सौदामिन्यै
73. शुच्यै 74. सौभागिन्यै 75. शोषिण्यै
76. सुगन्धायै 77. सुमनः प्रियायै 78. सौरभेय्यै
79. सुसुरम्यै 80. श्वेतातपत्रधारिण्यै 81. शृंगारिण्यै
82. सत्यवक्त्र्यै 83. सिद्धार्थायै 84. शीलभूषणायै
85. सत्यार्थिन्यै 86. संध्याभायै 87. शच्यै
88. सत्कृत्यै 89. सिद्धिदायै 90. संहारकारिण्यै
91. सिंह्यै 92. सप्तार्चिषे 93. सफलायै
94. अर्घ्यदायै 95. संध्यायै 96. सिन्दूरवर्णाभायै
97. सिन्दूरतिलकप्रियायै 98. सारंगायै 99. सुतरायै
100. शुभभाषिण्यै।

अर्घ्य (नरेन्द्र छंद)

सरस्वती से शुभभाषिणी तक, सौं तुम नाम मनोहर।
कुंकुम हल्दी पुष्प चढ़ा मैं, उनको जपूँ निरन्तर।।
सहस्र नाम पद्मावती माँ के, जो श्रद्धा से ध्यायें।
उनके सर्वकार्य सिद्धी हो, मिटें सभी बाधायें।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सरस्वत्यादि शुभभाषिण्यन्तशतनामधारिण्यै पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।6।। शांतिधारा, पुष्पांजलि।।

भुवनेश्वर्यादि शतं

1. भुवनेश्वर्यै	2. भूषणायै	3. भुवनायै
4. भूमिपप्रियायै	5. भूमिगर्भायै	6. भूपवंद्यायै
7. भुजंगेशप्रियायै	8. भुजंगाम्बिकायै	9. भुजंगभूषणायै
10. भोगायै	11. भुजंगकरशायिन्यै	12. भृंग्यै
13. भीतिहरायै	14. भाग्यायै	15. भीमभीमाट्टहासिन्यै
16. भारत्यै	17. भवत्यै	18. भंग्यै
19. भगिन्यै	20. भोगमंदिरायै	21. भद्रिकायै
22. भद्ररुपायै	23. भूतात्मायै	24. भूतभंजिन्यै
25. भवान्यै	26. भैरव्यै	27. भीमायै
28. भामिन्यै	29. भ्रमनाशिन्यै	30. भुजंगिन्यै
31. भुशुंड्यै	32. मेदिन्यै	33. भूम्यै
34. भूषणायै	35. भिन्नायै	36. भाग्वत्यै
37. भाषायै	38. भोगिन्यै	39. भोगवल्लभायै
40. भूरिदायै	41. भुक्तिदायै	42. भुक्त्यै
43. भवसागरतारिण्यै	44. भास्वत्यै	45. भाश्वरायै
46. भूत्यै	47. भूतिदायै	48. भूतिवर्द्धिन्ये
49. भाग्दायै	50. भोगदायै	51. भोग्यायै
52. भाविन्यै	53. भवनाशिन्यै	54. भिक्षवै
55. भट्टारिकायै	56. भीर्वै	57. भ्रामर्यै
58. भ्रमर्यै	59. भवायै	60. भण्डिन्यै
61. भाण्डदायै	62. भण्डयै	63. भल्लक्यै
64. भूरिभजिन्यै	65. भूमिगायै	66. भूमिदायै

67. भाष्यायै 68. भक्षिण्यै 69. भृगुरजिन्यै
70. भाराकृन्तायै 71. भूमिभूषायै 72. भंजिन्यै
73. भूमिपालिन्यै 74. भद्रायै 75. भगवत्यै
76. भक्तायै 77. वत्सलायै 78. भाग्यशालिन्यै
79. खेचर्यै 80. खड्गहस्तायै 81. खण्डिन्यै
82. खलमर्दिन्यै 83. खट्वांगधारिण्यै 84. खट्वायै
85. खड्गायै 86. खगवाहिन्यै 87. षट्चक्रभेदिन्यै
88. ख्यातायै 89. खगपूज्यायै 90. खगेश्वर्यै
91. लागल्यै 92. ललनायै 93. लेखायै
94. लेखिन्यै 95. ललितालतायै 96. लक्ष्म्यै
97. लक्ष्मवत्यै 98. लक्ष्यायै 99. लाभदायै
100. लोभवर्जितायै।

अर्घ्य (नरेन्द्र छंद)

भुवनेश्वरी से लोभ वर्जिता, नाम तुम्हारे माता।
कुमकुम और गुलाब चढ़ा मैं, सौ नामों को ध्याता॥
सहस्र नाम पद्मावती माँ के, जो श्रद्धा से ध्यायें।
उनके सर्वकार्य सिद्धी हो, मिटें सभी बाधायें॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं भुवनेश्वर्यादि–लोभवर्जितान्तशतनाम धारिण्यै पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥7॥ शांतिधारा, पुष्पांजलि॥

लीलावत्यादि शतं

1. लीलावत्यै 2. ललामाभायै 3. लोहमुद्रायै
4. लिपिप्रियायै 5. लोकेश्वर्यै 6. लोकमात्रै
7. लब्ध्यै 8. लोकान्तपालिन्यै 9. लोलायै
10. ललामदायै 11. लीलायै 12. लावण्यायै
13. ललितायै 14. अर्थदायै 15. लोभघ्न्यै
16. लम्बन्यै 17. लंकायै 18. लक्षणायै
19. लक्षवर्जितायै 20. उमायै 21. उर्वश्यै
22. उदीच्यै 23. उद्योतायै 24. उद्योतकारिण्यै
25. उदारिष्यै 26. उद्वरोदक्यायै 27. उद्विज्यायै
28. उदकवासिन्यै 29. उदाहारायै 30. उत्तमायै

31. उत्तमार्यायै, 32. औषध्यै 33. उदधितरिण्यै
34. उत्तरायै 35. उत्तरवादिन्यै 36. उद्धरायै
37. उद्धरनिवासिन्यै 38. उत्कलिन्यै 39. उत्कलिन्यायै
40. उत्कीर्णायै 41. उत्कररूपिण्यै 42. ऊँकारायै
43. ओंकाररूपायै 44. अम्बिकायै 45. अम्बरचारिन्यै
46. अमोघाशायुजायै 47. अन्तायै 48. अणिमादिगुणसंयुतायै
49. अनादिनिधनायै 50. अनन्तायै 51. कोदण्डपरिहासिन्यै
52. अर्पणायै 53. अर्थायै 54. बिन्दुधरायै
55. अलोकायै 56. अलल्यालिवांगनायै 57. आनन्दायै
58. आनन्ददायै 59. अलंकारायै 60. लज्जायै
61. सिद्धिप्रदायिकायै 62. अव्यक्तायै 63. अश्रमयायै
64. अमूर्त्यै 65. अजीर्णायै 66. अजीर्णहारिण्यै
67. अहंकृत्यायै 68. अजरायै 69. अरजसे
70. अहंकारायै 71. अरात्यै 72. अन्तदायै
73. अनुरूपायै 74. अर्थमूलायै 75. क्रीड़ायै
76. कैरवायै 77. पालिन्यै 78. अनोकहासुतायै
79. अभेद्यायै 80. अच्छेद्यायै 81. आकाशगामिन्यै
82. अन्तरायै 83. आराधितायै 84. आधारायै
85. उदग्रधायै 86. गंधज्ञालिन्यै 87. अलकायै
88. अलम्बनायै 89. अलंध्यायै 90. शीतायै
91. शेखरधारिण्यै 92. आकर्षणायै 93. अधरायै
94. अरागायै 95. मोदजायै 96. मोदधारिण्यै
97. अहिनाथायै 98. अहिप्रियायै 99. अहिप्राणायै
100. अहोश्वर्यै।

अर्घ्य (नरेन्द्र छंद)

लीलावती से अहोश्वरी तक, सौ तुम नाम निराले।
पुष्प चढ़ा जो भजता तुमको, उसके संकट टाले।।
सहस्र नाम पद्मावती माँ के, जो श्रद्धा से ध्यायें।
उनके सर्वकार्य सिद्धी हो, मिटें सभी बाधायें।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं लीलावत्यादि–अहोश्वर्यन्त शतनाम धारिण्यै पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।8।। शांतिधारा, पुष्पांजलि।।

त्रिनेत्रादि शतं

1. त्रिनेत्राय
2. त्र्यम्बिकायै
3. तंत्र्यै
4. त्रिपुरायै
5. त्रिपुरभैरव्यै
6. त्रिपृष्ठाय
7. त्रिफणायै
8. तारायै
9. तोतिलायै
10. त्वरितायै
11. तुलायै
12. तप: प्रियायै
13. तापस्यै
14. तपोनिष्ठायै
15. तपस्विन्यै
16. त्रैलोक्यदीपिकायै
17. त्रैधायै
18. त्रिसन्ध्यायै
19. त्रिपदाश्रयायै
20. त्रिरुपायै
21. त्रिपथात्राणायै
22. तारायै
23. त्रिपुरसुन्दर्यै
24. त्रिलोचनायै
25. त्रिपथगायै
26. तारामानविमर्दिन्यै
27. धर्मप्रियायै
28. धर्मदायै
29. धर्मिण्यै
30. धर्मपालिन्यै
31. धरायै
32. धरधरायै
33. धारायै
34. धात्र्यै
35. धर्मांगपालिन्यै
36. धौतायै
37. धृत्यै
38. धुर्यै
39. धीरायै
40. धुनुन्यै
41. धनुर्धरायै
42. ब्रह्माण्यै
43. ब्रह्मगोत्रायै
44. ब्राह्मण्कै
45. ब्रह्मपालिन्यै
46. ब्राह्मयै
47. विद्युत्प्रभायै
48. वीरायै
49. वीणायै
50. वासवपूजितायै
51. गीतप्रियायै
52. गर्भधरायै
53. गर्भदायै
54. गजगामिन्यै
55. गंगायै
56. गोदावर्यै
57. गोर्गायै
58. गायत्र्यै
59. गणपालिन्यै
60. गोचर्यै
61. गोमत्यै
62. गुब्बर्यै
63. गन्धायै
64. गान्धारिण्यै
65. गुहायै
66. गरीयस्यै
67. गुणोपेतायै
68. गरिष्ठायै
69. गरमर्दिन्यै
70. गंभीरायै
71. गुरुरुपायै
72. गीतायै
73. गर्वापहारिण्यै
74. गृहिण्यै
75. गृह्यिण्यै
76. गौर्यै
77. गन्धायै
78. गन्धवासिन्यै
79. गारुड्यै
80. ग्रासिन्यै
81. गूठायै
82. गेहिन्यै
83. गुणदायिन्यै
84. चक्रमाध्यायै
85. चक्रधारायै
86. चित्रिण्यै
87. चित्ररुपिण्यै

88. चर्चितायै 89. चतुरायै 90. चित्रायै
91. चित्रमायायै 92. चर्तुभुजायै 93. चन्द्राभायै
94. चन्द्रवर्णायै 95. चक्रिण्यै 96. चक्रधारिण्यै
97. चक्रायुधायै 98. चक्रधरायै 99. चण्डयै
100. चण्डपराक्रमायै।

चक्रेश्वर्यादि अष्टोत्तर शतं

अर्घ्य (नरेन्द्र छंद)

त्रिनेत्राय से चंड़ पराक्रम, शत नामादि प्यारे।
हल्दी कुंकुम पुष्प सजाकर, आया माँ तव द्वारे।।
सहस्र नाम पद्मावती माँ के, जो श्रद्धा से ध्यायें।
उनके सर्वकार्य सिद्धी हो, मिटें सभी बाधायें।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं त्रिनेत्रादि–चण्डपराक्रमान्त शतनामधारिण्यै पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।9।। शांतिधारा, पुष्पांजलि।।

1. चक्रेश्वर्यै 2. चसूचिन्त्यायै 3. चंचलायै
4. चंचलान्मिकायै 5. चन्द्रलेखायै 6. चन्द्रभागायै
7. चन्द्रिकायै 8. चन्द्रमन्डलायै 9. चन्द्रकान्त्यै
10. चन्द्रमश्रियै 11. चन्द्रमण्डलवर्तिन्यै 12. चतु:समुद्रपारान्तायै,
13. चतुराश्रमवासिन्यै 14. चतुर्मुख्यै 15. चन्द्रमुख्यै
16. चतुवर्गफलप्रदायै 17. चित्स्वरुपायै 18. चिदानन्दायै
19. चितामन्यै 20. चिरंतन्यै 21. चन्द्रहासायै
22. चामुण्डायै 23. चेतनायै 24. चौर्यतर्जिन्यै
25. चैत्यप्रियायै 26. चैत्यलीनायै 27. चिन्ततार्थफलप्रदायै
28. ह्रीरूपायै 29. हंसगामिन्यै 30. हाकिन्यै
31. हिंगुलायै 32. हितायै 33. हलायै
34. हलधरायै 35. हालायै 36. हंसवर्णायै
37. हर्षदायै 38. हिमान्यै 39. हरित्तायै
40. हीरायै 41. हर्षिण्यै 42. हरिमर्दिन्यै
43. गोपिन्यै 44. गौर्यै 45. गिरये
46. गाथायै 47. दुर्गायै 48. दुर्ललितादरायै

49. दामिन्यै 50. दीर्घीकायै 51. दुग्धायै
52. दुर्गमायै 53. दुर्लभोदयायै 54. द्वरिकायै
55. दक्षिणायै 56. दक्षायै 57. दीक्षायै
58. दीक्षितपूजितायै 59. दमयन्त्यै 60. दानवत्यै
61. द्युत्यै 62. दीप्तायै 63. दीवागत्यै
64. दरिद्रध्न्यै 65. वैरिदुरायै 66. दरायै
67. दुर्गतिनाशिन्यै 68. दर्प्पध्न्यै 69. दैत्यनाशायै
70. दर्शिन्यै 71. दर्शनप्रियायै 72. वृषप्रियायै
73. वृषभार्यै 74. वृषारुढ़ायै 75. प्रबोधिन्यै
76. सूक्ष्मायै 77. सूक्ष्मगत्यै 78. श्लक्ष्णायै
79. धनमालायै 80. घनध्वन्यै 81. छायायै
82. छत्रच्छव्यै 83. क्षीरायै 84. क्षीरदायै
85. क्षेत्ररक्षिण्यै 86. अमरात्मनै 87. अतिरात्र्यै
88. रागिन्यै 89. रतिदारुपायै 90. स्थूलायै
91. स्थूलतरायै 92. स्थूल्यै 93. स्थडिलशयायै
94. स्थंडिलवासिन्यै 95. स्थिरायै 96. स्थाणुमत्यै
97. दैव्यै 98. घनायै 99. घोरनिनादिन्यै
100. क्षेमकर्यै 101. क्षेमवर्त्यै 102. क्षेमदायै
103. क्षेमवर्द्धिन्यै 104. शैलूषरुपिण्यै 105. शिष्टेायै
106. संसारार्णवतारिण्यै 107. सदासहायिन्यै 108. परमेश्वर्यै।

अर्घ्य (नरेन्द्र छंद)

चक्रेश्वरी से परमेश्वरी तक, सभी नाम दुःखहारी।
इक सौ आठ नाम माता के, सबको मंगलकारी।।
सहस्र अठोत्तर नाम मात के, जो श्रद्धा से ध्यायें।
उनके सर्वकार्य सिद्धी हो, मिटें सभी बाधायें।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं चक्केश्वर्यादि–परमेश्वर्यन्ताष्टोत्तरशतनाम धारिण्यै श्री पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।10।।

इति श्री पद्मावती देवी अष्टोत्तर सहस्रनाम बीजाक्षर मन्त्राः सम्पूर्णाः।।1008।।

● ● ●

श्री भैरव पद्मावती विधान

(गीता छंद)

पद्मावती हंसासनी, हे धर्मतीर्थ निवासिनी !।
प्रभु पार्श्व को मस्तक धरे, चौबीस बाहु धारिणी॥
श्रृंगार सोलह हम करें, संगीत संग गोदी भरें।
दरबार पुष्पों से सजा, आह्वान हम तेरा करें॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं पार्श्वनाथ जिनशासन यक्षिणी धरणेन्द्र प्रिये हे पद्मावती महादेवी ! अत्रागच्छ–2 तिष्ठ–तिष्ठ इति आह्वाननम्, स्थापनम्। पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मावती देव्यै स्वाहा, ॐ पद्मावती परिजनाय स्वाहा। पद्मावती अनुचराय स्वाहा। पद्मावती महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भू स्वाहा। भुर्वः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।

(यहाँ पर हल्दी, कुंकुम, पीले चावल या सरसों 14 बार चढ़ाना है।)

(शेर छंद)

सोने की झारी में चढ़ायें, नीर आपको।
पद्मावती माता मिटाओ, सर्व पाप को॥
चौबीस भुजा धारिणी, पद्मावती माता।
सुख शांति दे सौभाग्य दे, पद्मावती माता॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै जलं समर्पयामि स्वाहा।

प्रभु पार्श्व के चरण से, माँ ने शीश सजाया।
उस शीश पे ही हमने आज गंध लगाया॥ चौबीस... ॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै गंधं समर्पयामि स्वाहा।

गज मोती हार से, तुम्हारा कंठ सजायें।
अक्षय अखंड तंदुलों के पुंज चढ़ायें॥ चौबीस... ॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै अक्षतं समर्पयामि स्वाहा।

हे माँ ! तुम्हें सब देश के, हम पुष्प चढ़ायें।
पुष्पों से तेरे द्वार को, व तुमको सजायें॥
चौबीस भुजा धारिणी, पद्मावती माता।
सुख शांति दे सौभाग्य दे, पद्मावती माता॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै पुष्पं समर्पयामि स्वाहा।

छप्पन प्रकार व्यंजनों के, थाल चढ़ायें।
तेरी कृपा प्रसाद, भाग्यवान ही पाये॥ चौबीस...॥5॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा।

लाखों करोड़ दीप से, हम आरती करें।
सम्यक्त्व दीप आत्म ज्ञान, भारती वरें॥ चौबीस...॥6॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै दीपं समर्पयामि स्वाहा।

गुग्गुल दशांग धूप अग्नि, में ही जलायें।
तू कष्टहारिणी हमारे, कष्ट जलाये॥ चौबीस...॥7॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै धूपं समर्पयामि स्वाहा।

हाथों में मातुलिंग नित्य, शोभता तेरे।
मेवा मनोज्ञ फल चढ़ायें, गोद में तेरे॥ चौबीस...॥8॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै फलं समर्पयामि स्वाहा।

हर कार्य पूर्व मात, तुझे अर्घ चढ़ायें।
निर्विघ्न कार्य पूर्ण करने, तुमको बुलायें॥ चौबीस...॥9॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा : पार्श्व प्रभु की यक्षिणी, पद्मावती प्रधान।
उनका अतिशय सिद्धी प्रद, करते श्रेष्ठ विधान॥

अथ प्रथम वलये मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(सर्व क्षेत्रवासिनी माता के अर्घ)

(नरेन्द्र छंद)

''धर्मतीर्थ वासिनी माता का अर्घ''

अतिशय भू कचनेर ग्राम में, धर्मतीर्थ अति मनहर।
इसमें भैरव पद्मावती माँ, चौबीस कर युत सुन्दर॥
अष्ट धातुमय सवा सात फिट, परिकर वाली माता।
तुमको अर्घ चढ़ायें मैया, मेटो सर्व असाता॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं धर्मतीर्थ निवासिनी भैरव पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

पार्श्वनाथ प्रभु का जन्म स्थल, काशी देश बनारस।
महामंत्र नवकार सुनाये, नागयुगल को पारस॥
पार्श्व कृपा से नाग युगल ने, यही देव तन पाया।
काशी वाली पद्मांबा को, हमने अर्घ चढ़ाया॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं भेलूपुरा बनारसनिवासिनी पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

विंध्यावन भीमा अटवी में, पारस ध्यान लगायें।
यही महा उपसर्ग कमठ शठ, प्रभु पे कर बौराये॥
पद्मावती धरणेन्द्र यक्ष ने, आ उपसर्ग मिटाया।
विंध्यवासिनी पद्मावती को, हमने अर्घ चढ़ाया॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं विंध्यवासिनी उपसर्ग निवारिणी पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

हुमचा पद्मावती में माता, तेरी महिमा भारी।
चौदह सौ वर्षों से पूजें, लाखों नृप नर-नारी॥
जब तक सरवर निर्गुंडी तरु, कर से फूल गिरेगा।
तुमने बतलाया माँ तेरा, हुमचा वास रहेगा॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हुमचावासिनी होम्बुज पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

कश्मळगी में अष्टोत्तर शत, कर वाली माँ पद्मा।
क्षेत्र जानकळ बीजापुर में, तेरी सुन्दर प्रतिमा॥

मूड़बद्रि वेणूर कारकल, मधुवन नागफणी में।
सब माता को अर्घ चढ़ायें, वो श्रीमात मणी है॥5॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं कश्मळगी, जानकळ, बीजापुर, मूढ़बद्री, वेणूर, कारकल, मधुवन, नागफणी आदि सर्वतीर्थ निवासिनी पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

दिल्ली लाल किले के सन्मुख, मंदिर लाल बना है।
उस मंदिर में हे माँ ! तेरा, अतिशय बहुत घना है॥
झुका दिया मुगलों को तुमने, घंटा बजा-बजाकर।
सब दिल्ली की माता तुमको, लायें अर्घ सजाकर॥6॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं लाल मंदिर आदि दिल्ली स्थित सर्व जिनालये निवासिनी पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

पात्र केशरी महाश्रमण को, तुमने पथ दिखलाया।
अहिक्षेत्र में प्रभु के फण पर, तुमने छंद रचाया॥
पात्र केशरी सहित पाँच सौ, ब्राह्मण मुनिपद पायें।
अर्घ चढ़ायें हम तुमको माँ, अतिशय भूल न पायें॥7॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अहिक्षेत्रवासिनी पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

तीर्थ अणिंदा कुंथुगिरी में, कुंथु गुरु की महिमा।
दोनों में गुरु ने बैठाई, तेरी ऊँची प्रतिमा॥
नवरात्रि सावन में लगता, भक्तों का नित मेला।
लगे यहाँ दरबार तुम्हारा, सब जग से अलबेला॥8॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं कुंथुगिरी, अणिंदा आदि अतिशय क्षेत्र वासिनी पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

उगार बाबानगर तीर्थ में, तुम अतिशय फैला है।
पलवल में तुम प्रगटी माता, यह भी अलबेला है॥
बड़ौत रोहतक में माँ तेरे, बढ़े जागरण होते।
भरे गोद माता रानी की, नहीं रात भर सोते॥9॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं उगार, बाबानगर, पलवल, बड़ौत, रोहतक, क्षेत्रवासिनी अतिशयकारिणी पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

चिंतामणी संकट हर पारस, चिंता हरने वाले।
जटवाड़ा कचनेर विराजे, सब सुख देने वाले॥
दोनों तीर्थों में माँ तुमने, अतिशय खूब बढ़ाया।
अतिशयकारी पद्मा माँ को, हमने अर्घ चढ़ाया॥10॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं कचनेर जटवाड़ा क्षेत्रवासिनी अतिशयकारिणी पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

गजपंथा मांगीतुंगी वा, मुम्बई अंजनगिरी में।
णमोकार तीरथ में राजी, शोभे हर नगरी में॥
चंपावती व कर्णपुरा में, औ संभाजी नगर में।
अर्घ चढ़ायें तुमको माता, वास तेरा हर घर में॥11॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं गजपंथा, मांगीतुंगी, मुम्बई, अंजनगिरी, णमोकार तीर्थ, बीड़, कर्णपुरा, संभाजी नगर आदि सर्वक्षेत्र, नगर, ग्राम, गृह निवासिनी पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

श्रवणबेलगोला में तू है, वरूर बेड़िया जी में।
नागपुर ऋषितीर्थ विराजी, शोभे कनकगिरी में॥
गुप्ति सेवा केन्द्र विराजी, आदि सभी क्षेत्रों में।
तेरी मूरत बसी है मैया, जन-जन के नेत्रों में॥12॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्रवणबेलगोला, नवग्रह तीर्थ वरुर, बेड़िया, नागपुर, ऋषितीर्थ इन्दौर, कनकगिरी, गुप्ति सेवा केन्द्र आदि सर्वक्षेत्र निवासिनी पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छन्द)

भरत क्षेत्र के सब तीर्थों पर, पद्मावती माँ राजे।
वहाँ दिव्य श्रृंगार करें सब, ढोल नगाड़े बाजे॥
चौबीस भुजा धारिणी माता, धर्म तीर्थ चमकाये।
धर्मतीर्थ पर धर्म ध्वजा संग, हम पूर्णार्घ चढ़ायें॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं सर्व सिद्धक्षेत्र, तीर्थ क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र निवासिनी हे पद्मावती महादेव्यै पूर्णार्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

षोडशोपचार पूजा

अथ द्वितीय वलये मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(शेर छंद)

माँ स्वर्ण सिंहासन पे, तुम्हें आज बिठायें।
फिर दिव्य स्वर्ण कुंभ, आप अग्र चढ़ायें।।
चौबीस भुजा धारिणी, पद्मावती माता।
सुख शान्ति दे सौभाग्य दे, पद्मावती माता।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै पाद्यं[1] समर्पयामि स्वाहा।

पंचामृतादि द्रव्य से, अभिषेक हम करें।
संगीत ताल छन्द संग, नृत्य हम करें।। चौबीस..।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै पंचामृत द्रव्यं समर्पयामि स्वाहा।

रंगीन मणि रत्नजड़ित, वस्त्र चढ़ायें।
पहना के माँ को वस्त्र, भक्त भाग्य जगायें।। चौबीस..।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै दिव्य वस्त्रार्चनम् समर्पयामि स्वाहा।

माता के अंग-अंग पे, सजायें आभरण।
कुण्डल किरीट कंठहार, और बाजुबंद।। चौबीस..।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै षोडशाभरणार्चनम् समर्पयामि स्वाहा।

हे अंब तुम्हें छत्र चँवर, आदि चढ़ायें।
मेंहदी बिछुड़ी पुष्पहार, बिंदी चढ़ायें।। चौबीस..।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै पुष्प मालारोपणं छत्र-चामरादि अर्चनम् समर्पयामि स्वाहा।

कुंकुम सुगंध टीका, माँ के माथ लगायें।
चूड़ी व मंगल सूत्र माता, तुमको चढ़ायें।। चौबीस..।।6।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै कुंकुम तिलकार्चनम् समर्पयामि स्वाहा।

1. यहाँ स्वर्ण कलश के माता के पैर धुलायें।

दर्पण का समर्पण करें, हम मात आपको।
आगम प्रमाण से भजें, हम मात आपको।।
चौबीस भुजा धारिणी, पद्मावती माता।
सुख शान्ति दे सौभाग्य दे, पद्मावती माता।।7।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै दर्पणार्चनम् समर्पयामि स्वाहा।

मीठे मनोज्ञ लम्बे, इक्षुदंड चढ़ायें।
वाणी मधुर बने हमारी, कोप नशायें।। चौबीस..।।8।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै इक्षुदण्डार्चनम् समर्पयामि स्वाहा।

जो रत्न जड़ित स्वर्ण कुंभ, माँ को चढ़ायें।
वे रत्नजड़ित स्वर्ण महल, भाग्य से पायें।। चौबीस..।।9।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै सुवर्ण कलशार्चनम् समर्पयामि स्वाहा।

प्रभु पार्श्व की यशोपताका, तुमने फहराई।
इस हेतु हमने मात, तुम्हें ध्वजा चढ़ाई।। चौबीस..।।10।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै पताकार्चनम् समर्पयामि स्वाहा।

माता को चढ़ायें चना, जो शक्ति तेज दे।
चुन-चुन केमाता रानी, उसेसुख की सेज दे।। चौबीस..।।11।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै चणकार्चनम समर्पयामि स्वाहा।

जो भक्त भक्ति से, सभी पक्वान्न चढ़ायें।
माता भी ऐसे भक्त के, भंडार भरायें।। चौबीस..।।12।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै पक्वान्नअर्चनम् समर्पयामि स्वाहा।

मीठे रसीले श्रेष्ठ, फल के थाल सजायें।
माता को नृत्य वाद्य संग, रोज चढ़ायें।। चौबीस..।।13।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै फलं समर्पयामि स्वाहा।

हम भक्ति करें पूजा करें, वाद्य बजायें।
माता तेरे दरबार में, सब नृत्य रचायें।। चौबीस..।।14।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै मंगलवाद्यं समर्पयामि स्वाहा।

काजल सुगंध इत्र कंघी, धूप चढ़ायें।
लेकर सुपारी पान, सर्व मेवा चढ़ायें॥
चौबीस भुजा धारिणी, पद्मावती माता।
सुख शान्ति दे सौभाग्य दे, पद्मावती माता॥15॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

चोला चढ़ा श्रृंगार करें, भक्ति से तेरा।
सब कार्य में सहयोग दो, सब काम हो मेरा॥ चौबीस..॥16॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै आभरण समर्पयामि स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छन्द)

करें महाश्रृंगार आपका, वा दरबार सजायें।
हल्दी कुंकुम तुम्हें लगायें, मंगल गोद भरायें॥
चौबीस भुजा धारिणी माता, धर्म तीर्थ चमकाये।
धर्मतीर्थ पर धर्म ध्वजा संग, हम पूर्णार्घ चढ़ायें॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं षोडशाभरण समेत महाश्रृंगार पूर्वक हे पद्मावती महादेव्यै पूर्णार्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

(सर्वकार्य सिद्धी के अर्घ)

अथ तृतीयवलये मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(शेर छंद)

संतानहीन को तू माँ संतान दिलायें।
संस्कारवान श्रेष्ठ भाग्यवान बनायें॥
हे पार्श्वनाथ सेविका !, पद्मावती माता।
भक्तों के भाग्य को संवार, अंबिका माता॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं पुत्र–पुत्री आदि श्रेष्ठ संतति प्रदायिनी हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

बुद्धिविहीन को तू बुद्धिमान बनाये।
गुणवान भाग्यवान विद्यावान बनाये।।
हे पार्श्वनाथ सेविका !, पद्मावती माता।
भक्तों के भाग्य को संवार, अंबिका माता।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सद्बुद्धि विद्या सौभाग्य प्रदायिनी हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

विद्यार्थियों को माँ तू ही विद्या प्रदायिनी।
संगीत गीत नृत्य चित्र ज्ञान दायिनी।। हे पार्श्वनाथ..।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं शास्त्र, संगीत, गीत, नृत्य, चित्रकला आदि सर्वविद्या प्रदायिनी हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

व्यापार वृद्धि अर्थ सिद्धी कार्य-सिद्धियाँ।
पद्मावती माता से मिले सर्व सिद्धियाँ।। हे पार्श्वनाथ..।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं व्यापार वृद्धि अर्थ सिद्धि सर्वकार्य सिद्धि प्रदायिनी हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

पाताल महिषी तू भूमि भवन दिलाये।
वास्तु के सर्व दोष से तू मात बचाये।। हे पार्श्वनाथ..।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं भूमि, भवन, वास्तु प्रदायिनी, सर्व वास्तु दोष निवारिणी हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

जिनको सुयोग्यवर या वधू की माँ चाह है।
उनको बताये मात तू ही नेक राह है।। हे पार्श्वनाथ..।।6।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सुयोग्य उभयकुल उद्धारक वर-वधु प्रदायिनी हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

तू दीन हीन रंक को भी भूप बनाये।
करके तू सावधान दानवान बनाये।। हे पार्श्वनाथ..।।7।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रचुर धन वैभव ऐश्वर्य प्रदायिनी हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

आपाद शीर्ष जो भी रोगग्रस्त हुआ है।
वो तेरा नाम लेके पूर्ण स्वस्थ हुआ है।।
हे पार्श्वनाथ सेविका !, पद्मावती माता।
भक्तों के भाग्य को संवार, अंबिका माता।।8।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं आपाद शीर्ष सर्वरोग निवारिणी हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

फोड़े सफेद दाग चर्म रोग मिटाये।
माता असाता कर्म को तू दूर भगाये।। हे पार्श्वनाथ..।।9।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं गड़गुमड़ श्वेत कुष्ठ आदि सर्व चर्मरोग निवारिणी हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

कर्कादि[1] दुष्ट राजरोग से तू बचाये।
अपघात व अपमृत्यु से तू मात बचाये।। हे पार्श्वनाथ..।।10।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कर्कादि सर्व क्रूर रोग निवारिणी हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

अति दुष्ट मंत्र यंत्र का प्रभाव नशाये।
प्राणान्तकारी तंत्र से तू मात बचाये।। हे पार्श्वनाथ..।।11।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं अति दुष्ट मंत्र–यंत्र–तंत्र–मूठ आदि कुविद्या विनाशिनी हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

व्यंतर पिशाच डाकिनी से माँ तू बचाये।
सब दुष्ट दैत्य भूत–प्रेत से तू बचाये।। हे पार्श्वनाथ..।।12।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सर्वभूत–प्रेत व्यन्तर पिशाच आदि दुष्ट दैत्य, मनुष्यकृत दृष्टि दोष आदि सर्व उपद्रव विनाशिनी हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

जिनको भी क्रूर ग्रहों ने हे मात ! सताया।
उस भक्त को हे मात ! तूने आन बचाया।। हे पार्श्वनाथ..।।13।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सर्वक्रूर ग्रहकृत उपद्रव विनाशिनी हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

---

1. कैंसरादि।

संसार के अपार युद्ध में तू जितायें।
दुःखियारे को बना सुखी सम्मान दिलाये।।
हे पार्श्वनाथ सेविका !, पद्मावती माता।
भक्तों के भाग्य को संवार, अंबिका माता।।14।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं संग्रामे विजय सौख्य सम्मानप्रदायिनी हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

जिनको नहीं सहारा, माँ तू उनकी सहायी।
आई प्रत्यक्ष या तू माँत स्वप्न में आयी।। हे पार्श्वनाथ..।।15।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सर्वभक्त रक्षिणी शरण प्रदायिनी हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

पारस प्रभु का तूने माँ उपसर्ग मिटाया।
श्रद्धा से अपने शीश पे प्रभुवर को बिठाया।। हे पार्श्वनाथ..।।16।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं तीर्थंकरोपरि उपसर्ग निवारिणी हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

आचार्य व मुनिराज के उपसर्ग मिटाये।
अकलंक आदि को तू मात विजय दिलाये।। हे पार्श्वनाथ..।।17।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं धर्माचार्योपसर्ग निवारिणी सर्वविजय प्रदायिनी हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

सतियों की अंब आके तूने लाज बचायी।
मुक्ति के राही की बने तू मात सहायी।। हे पार्श्वनाथ..।।18।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं शील संरक्षिणी सर्व बाधा निवारिणी हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

सम्यक्त्व ज्योति का प्रभाव आप में अहा।
हर भक्त से वात्सल्य भाव आपमें रहा।। हे पार्श्वनाथ..।।19।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सम्यक्त्वधारिणी, वात्सल्यवर्द्धिनी हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

धन धान्य संपदा के संग धर्म बढ़ाये।
फिर भक्त को वैराग्य मोक्ष मार्ग दिखाये।।
हे पार्श्वनाथ सेविका !, पद्मावती माता।
भक्तों के भाग्य को संवार, अंबिका माता।।20।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं दानादि, धर्म, वैराग्य भाववर्द्धिनी, मोक्षमार्ग प्रभाविनी श्री जिन धर्मरक्षिणी हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

पार्श्वनाथ की शासन देवी, श्री पद्मावती माता।
माँ तू उसके कष्ट मिटाये, जो तुम शरणे आता।।
चौबीस भुजा धारिणी माता, धर्म तीर्थ चमकाये।
धर्म तीर्थ पर धर्म ध्वजा संग, हम पूर्णार्घ चढ़ायें।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सर्वविघ्न रोगोपसर्ग निवारिणी, सर्वकार्यसिद्धी प्रदायिनी हे पद्मावती महादेव्यै पूर्णार्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

24 भुजा के अर्घ (दोहा)

(अथ चतुर्थ वलये मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

'वज्रायुध' से पाप पे, करती वज्र प्रहार।
वज्र चढ़ायें हम तुम्हें, मिले शांति उपहार।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रथम सव्यहस्ते वज्रायुधधारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

दुर्जन पर अंकुश करें, कर में 'अंकुश' धार।
जो बिगड़ी संतान है, उनको आन सुधार।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं द्वितीय वामकरांकुशधारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

'कमल' धारती हाथ में, मन भी कमल समान।
कमलवासिनी माँ करे, सज्जन का उत्थान।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं तृतीय सव्यकर कमल धारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

'चक्रायुध' कर श्रेष्ठ है, चक्रधरी के पास।
नाशे चक्र कुचक्र के, करती धर्म विकास॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं चतुर्थ वामकर चक्रधारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

'छत्र' धारती हाथ में, प्रभु को छत्र चढ़ाय।
छत्र चढ़ाये जो तुम्हें, छत्रपति बन जाय॥5॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं पंचम सव्यकर छत्रधारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

'डमरू' छठवे हाथ में, नहीं डरातीं आप।
डमरु की डंकार सुन, भग जाये सब पाप॥6॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं षष्ठम वामकर डमरुधारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

'खर्पर' सप्तम हाथ में, कामाख्या तुम पास।
करे कामना पूर्ण सब, धरे धर्म उल्लास॥7॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं सप्तम सव्यकर खर्पर धारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

आम्र बिजोरा मातुलिंग, 'आम्र' मंजरी धार।
सफल बनाये भक्त को, कर सबका उद्धार॥8॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अष्टम वामकर आम्रफल धारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

नवम हाथ में 'खड्ग' है, माता तेरे पास।
सज्जन की रक्षा करे, हरे दुष्ट का त्रास॥9॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं नवम सव्यकर खड्गायुधधारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

धनुष हाथ दसवे रहे, माता तेरे पास।
दुष्टों पर अंकुश करे, और पाप का नाश॥10॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं दशम वामकर कोदंडधारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

'सर्पायुध' कर ग्यारवे, अहिमहिषी के पास।
कालसर्प बाधा हरे, और ग्रहों का त्रास॥11॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं एकादश सव्यकर पुंखसर्पशरधारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

'मूसल' बारवे हाथ में, धारे तू जगदंब।
सब दुर्नय को चूर कर, हरती मिथ्या दंभ॥12॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं द्वादश वामकर मूसलधारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

'हल'' है तेरवे हाथ में, पद्माम्बा के पास।
उनके सब दुःख हल करे, आये जो तुम पास॥13॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं त्रयोदश सव्यकर हलायुधधारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

'वन्हि' चतुर्दश हाथ में, भुवनेश्वरी के पास।
भक्तों में ऊर्जा भरे, करे तिमिर का नाश॥14॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं चतुर्दश वामकरोज्वलिताग्निधारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

भिण्डिमाल है हाथ में, माँ शक्ति के पास।
शक्ति पाने मात से, भक्त करे अरदास॥15॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं पंचदश सव्यकर भिण्डमाला धारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

'तारामंडल' धारिणी, तारे भक्त अशेष।
सर्व दुःखों से तारती, अर्चें भक्त विशेष॥16॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं षोडश वामकर तारामंडलधारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

'त्रिशूल' आपके हाथ में, रत्नत्रय का चिह्न।
भक्त सदा पूजा करे, पाने वो ही चिह्न॥17॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं सप्तदश सव्यकर त्रिशूलधारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

'परशु' धारे हाथ में, किन्तु न अघ स्पर्श।
पार्श्व प्रभु व श्रमण के, करे चरण स्पर्श॥18॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अष्टदश वामकर परशु आयुधधारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

'नाग' हाथ में धार तू, देती माँ वरदान।
शरणागत को अभय दे, कर देती धनवान॥19॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं एकोनविंशति सव्यकर नाग धारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

'मुद्गर' आयुध धार माँ, करे पाप संहार।
मधुर तेरा व्यवहार माँ, देती सुख उपहार॥20॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं विंशति वामकर मुद्गरधारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

'डंडा' आयुध धारिणी, दुष्टों को दे दंड।
सज्जन हो सब लोक में, नहीं रहे उद्दंड॥21॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं एकविंशति सव्यकर दंडधारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

'नागपाश' तुम हाथ में, नाग लोक में वास।
नागनाथिनी मात तुम, हरो सभी दुःख पाश॥22॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं द्वाविंशति वामकर नागपाश धारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

हाथ रखे 'पाषाण' तू, नहीं हृदय पाषाण।
कोमल मन माता तेरा, करे जगत कल्याण॥23॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं त्रयोविंशति सव्यकर पाषाण धारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

'वृक्षधारिणी' माँ तुही, देती शीतल छाँव।
दुःख सागर से तारने, बन जाती माँ नाव॥24॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं चतुर्विंशति वामकर वृक्षधारिण्यै हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

चौबीस हाथों से तू मैय्या, सबकी रक्षा करती।
सबके घर भंडार भरे माँ, सूनी गोदी भरती॥
चौबीस भुजा धारिणी माता, धर्म तीर्थ चमकाये।
धर्म तीर्थ पर धर्म ध्वजा संग, हम पूर्णार्घ चढ़ायें॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं चतुर्विंशति भुजाधारिणी हे पद्मावती महादेव्यै पूर्णार्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

महार्घ (नरेन्द्र छंद)

पार्श्वनाथ की शासन देवी, श्री पद्मावती माता।
माँ तू उसके कष्ट मिटाये, जो तुम शरणा आता॥
चौबीस भुजा धारिणी माता, धर्म तीर्थ चमकाये।
धर्म तीर्थ पर धर्म ध्वजा संग, हम पूर्णार्घ चढ़ायें॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं बालार्क वर्णे, सर्वलक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू सचिन्ह परिवार धर्मतीर्थ निवासिनी जगन्माता अस्य यजमानस्य (यजमान का नाम बोलें) सर्वरोग–दुःख–संकट–कष्ट–पीड़ा निवारिणी, पुत्र–पौत्र–धन–धान्य, सुख–समृद्धि, विद्या–बुद्धि ऐश्वर्य प्रदायिनी सर्व शान्त्यर्थं हे पद्मावती महादेवी तुभ्यं इदं अर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्प चरुं दीपं धूपं फलं ताम्बुलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे, प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यतां पूर्णार्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

दोहा– जल ले कंचन कुंभ में, करते शांतिधार।
पुष्पांजलि अर्पण करें, और करें जयकार।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र – ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मावती महादेव्यैः नमः (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– पद्मावती जगदंब की, गायें हम जयमाल।
जो गाये जयमाल यह, होवे मालामाल।।

(शंभु छंद)

जय समतामूरत बालयति, जय चिंतामणि पारस देवा।
जय अश्वसेन वामानंदन, उपसर्गजयी पारस देवा।।
हे नाथ ! आपके जीवन से, पद्मावती माँ का नाम अमर।
हम उसकी जयमाला गायें, बनने श्री शाश्वत सिद्ध अमर।।1।।

युवराज पार्श्व तीर्थंकर जिन, वन में मित्रों संग जाते हैं।
वहाँ तापस का खोटा तप लख, उसको प्रभुवर समझाते हैं।।
वे जलते नाग युगल को लख, उनको नवकार सुनाते हैं।
वे नाग युगल मरकर तत्क्षण, यक्षेन्द्र युगल बन जाते हैं।।2।।

इक दिन प्रभु ने मुनि मुद्रा धर, जब वन में ध्यान लगाया था।
तब तापस ने कमठासुर बन, प्रभु पर उपसर्ग रचाया था।।
आँधी तूफान चला उसने, अग्नि की ज्वाला बरसाई।
पाषाण वृक्ष विकराल फेंक, मूसल जलधारा बरसाई।।3।।

डाकिन शाकिन व्यंतर भेजें, नर मुंड रूधिर भी बरसाये।
अति दुष्ट क्रूर विकराल पशु, चिल्लाने खाने को आये।।

भव-भव के सब उपसर्गों को, वो सात दिवस दोहराता है।
पर समता मूरत पारस को, वो किंचित् डिगा न पाता है॥4॥

आसन कम्पित लख यक्ष युगल, तत्क्षण प्रभु सेवा में आये।
पद्मावती प्रभु को शीश धरे, धरणेन्द्र यक्ष फण फैलाये॥
तब भीषण शब्द करे पद्मा, जिसको सुन व्यंतर भाग गया।
उपसर्ग मिटा प्रभु पारस का, प्रभु का केवल रवि जाग गया॥5॥

प्रभु की रक्षा को जब तुमने, अति भीषण शब्द किया माता।
तब से भैरव पद्मावती माँ, जग में तुम नाम पढ़ा माता॥
फटकार तुम्हारी सुन माता, व्यंतर डर भागा भरमाया।
सारी दुनिया में डरा छिपा, आखिर में प्रभु शरणा आया॥6॥

पारस प्रभु की शासन यक्षी, पद्मावती माता कहलाई।
पारस प्रभु की जिनधर्म ध्वजा, तुमने माँ जग में फहराई॥
कई आचार्यों मुनिराजों का, तूने उपसर्ग मिटाया है।
सतियों की लाज बचा तूने, दुष्टों को मार भगाया है॥7॥

पारस प्रभु के सब तीर्थों में, माँ तू अतिशय दिखलाती है।
तब चमत्कार सुन द्वार तेरे, भक्तों की टोली आती है॥
जिनदत्तराय को माँ तू ही, काशी से हुमचा में लाई।
श्री हुमचा अतिशय क्षेत्र बना, बस तेरी महिमा से माई॥8॥

इस तीरथ में नव चमत्कार, माँ अब भी होते रहते हैं।
भक्तों के प्रश्नों पर मैय्या, तव कर से फूल बरसते हैं॥
जिसने व्रत संपत् शुक्रवार, विधिवत श्रद्धा से पाल लिया।
उसको रुक्मा सम माँ तूने, बिन माँगे मालामाल किया॥9॥

माँ जो तेरा श्रृंगार करे, उसके तू सब भंडार भरे।
जो तेरा नित अभिषेक करे, उसका तू सुख अभिषेक करे॥
माता जो तुझे झुलाता है, वो जग सुख झूला पाता है।
जो हल्दी कुमकुम भेंट करे, वो चिर सौभाग्य बढ़ाता है॥10॥

जो तव मंदिर निर्माण करे, सुन्दर प्रतिमा का दान करे।
उसके यश वैभव कीर्ति बढ़े, वो नित अपना उत्थान करे॥
परिवार ज्ञान धन मान बढ़े जिन दीक्षा ले कल्याण करे।
'गुप्तिनंदी' के भाव यही, माँ जिनशासन उत्थान करे॥11॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं स्वायुध वाहन वधू चिन्ह परिवार सहित सर्वरोग–दुःख–संकट–कष्ट–पीड़ा निवारिणी, पुत्र–पौत्र–धन–धान्य, सुख–समृद्धि, विद्या–बुद्धि ऐश्वर्य प्रदायिनी हे पद्मावती महादेवी तुभ्यं जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

दोहा– माँ भैरव पद्मावती, तेरा किया विधान।
आस्था से माँ तू बढ़ा, धर्मतीर्थ की शान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

विधान प्रशस्ति

(अडिल्ल छंद)

चौबीस तीर्थंकर को नमन करें सदा।
पार्श्वनाथ का आराधन करते सदा।।
जिनवाणी माँ गणधर गुरु को कर नमन।
पूर्वाचार्यों को करते शत-शत नमन।।1।।

आदि सिंधु महावीर कीर्ति गुरु को नमन।
विमल सूरि श्री सन्मति सूरि को नमन।।
दीक्षा गुरुवर कुन्थुसागर को नमन।
शिक्षा दाता कनकनंदी गुरु को नमन।।2।।

तीर्थ साजणी में विधान आरंभ कर।
सौंदामठ में पूर्ण किया उल्लास भर।।
पद्मावती माता का लघु विधान ये।
सब भक्तों को सुख-शांति यश ज्ञान दे।।3।।

पद्मावती माता के जितने क्षेत्र हैं।
ये विधान हो उन अतिशायी क्षेत्र में।।
पार्श्व प्रभु संग जुड़ा मात का नाम है।
'गुप्तिनंदी' का प्रभु को कोटि प्रणाम है।।4।।

दोहा

जब तक सूरज चांद है, तब कर रहे विधान।
धर्मतीर्थ में मात का, मंदिर बना महान।।

।। इतिअलम्।।

अर्घावली

श्री जिनवाणी माता (चामर छंद)

नीर गंध वस्त्रादि अर्घ भाव से लिया।
आपका विधान मात भक्ति भाव से किया॥
दिव्य देशना महान है जिनेश आपकी।
मात अर्चना हरे प्रवंचना विभाव की॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री तीन कम नवकोटि मुनिराज (शंभु छंद)

जल, चंदन, अक्षत, दीप, धूप, नैवेद्य, हरित फल लाया हूँ।
अन्तर में भक्तिभाव लिये ऋषिराज शरण में आया हूँ॥
नवकोटि न्यून त्रय मुनियों को मैं वंदन बारम्बार करूँ।
बन जाऊँ मुनिमन सम निर्मल यह शुद्ध भावना हृदय धरूँ॥

ॐ ह्रीं श्री अढ़ाई द्वीपस्थ न्यून त्रय नवकोटि श्रमणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गौतम गणधर (नरेन्द्र छंद)

कर्म अष्ट से लड़ने हेतु वेष दिगम्बर धार लिया।
क्षायिक पद की अभिलाषा से कर्म अरि पर वार किया॥
जल फल आदि आठ द्रव्य से करता प्रभु का अभिनंदन।
मुनिगण के स्वामी हैं गणधर उनका मैं करता अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी (शेर छंद)

आचार्य कुंथु सिंधु हैं वात्सल्य दिवाकर।
हम धन्य धन्य आज उनको अर्घ चढ़ाकर॥
जिनधर्म का डंका बजाना जिनका है धरम।
भक्ति से भक्त बोलो वंदे कुंथुसागरम्॥

ॐ ह्रीं गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्यरत्न श्री कनकनंदीजी गुरुदेव का अर्घ *(जोगीरासा छंद)*

कनकनंदी की ज्ञान रश्मियाँ, ज्ञान किरण फैलाये।
वैज्ञानिक आचार्य हमारे, सबको धर्म सिखाये।।
साम्य भाव ही सुख स्वभाव है, यही गुरु बतलाये।
कनक रजत की थाल सजा हम, गुरु को अर्घ चढ़ाये।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य वैज्ञानिक धर्माचार्य आचार्यरत्न श्री कनकनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यों अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव का अर्घ

(1) (शेर छंद)

आचार्य गुप्तिनंदी ने, कमाल कर दिया।
वात्सल्य से सभी को, मालामाल कर दिया।।
गुरुदेव मुस्कुराके, आशीर्वाद दीजिये।
पूजा हमारी आप ये, स्वीकार कीजिये।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2) (तर्ज - माईन-माईन....)

प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी, महाकवि गुणधारी।
आर्ष मार्ग की राह बतायें, जय हो गुरु तुम्हारी।।
बोलो गुप्तिनंदी की जय, बोलो कविहृदय की जय।
बोलो महाकवि की जय, बोलो धर्म सूर्य की जय।।
नीर गंध अक्षत पुष्पादि, अष्ट द्रव्य हम लाये।
कुंथु कनकनंदी के नंदन, तुमको अर्घ चढ़ायें।।
धर्म तीर्थ के प्रेरक गुरुवर-2, जन-जन के उपकारी।
हम सब तुमको शीश झुकायें, जय हो गुरु तुम्हारी।
बोलो गुप्तिनंदी की जय.....

ॐ ह्रीं परम पूज्य प्रज्ञायोगी, आर्षमार्ग संरक्षक, कविहृदय, धर्मक्रांति सूर्य, ज्ञान दिवाकर, व्याख्यान वाचस्पति, श्रावक संस्कार उन्नायक, महाकवि आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(शेर छंद)

मैं पूजता अरिहंत सिद्ध सूरि को सदा।
उवज्झाय सर्व साधु और शारदा मुदा।।
गणधर गुरु चरण की नित्य अर्चना करूँ।
दश धर्म सोलह भावना की अर्चना करूँ।।1।।

अरहंत भाषितार्थ दया धर्म को भजूँ।
श्री तीन रत्न रूप मोक्ष धर्म को जजूँ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य को ध्याऊँ।
चैत्यालयों का ध्यान लगा अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

सब सिद्ध क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र को भजूँ सदा।
औ तीन लोक के समस्त तीर्थ सर्वदा।।
चौबीस जिनवरों व बीस नाथ को ध्याऊँ।
जल आदि अष्ट द्रव्य ले पूर्णार्घ चढ़ाऊँ।।3।।

दोहा : जल आदिक वसु द्रव्य की, लेकर आये थाल।
महाअर्घ अर्पण करें, प्रभु को नमें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार,

सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, धर्मतीर्थ, वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव णमोकार ऋषि तीर्थ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत–भविष्यत–वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे..... प्रान्ते–नगरे.....मासानांमासे..... मासे.....पक्षे.....तिथौ.....वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शशि सम निर्मल जिन मुखधारी, शील सहस्र गुणों के धारी।
लक्षण वसु शत त्रयपदधारी, कमल नयन शांति सुखकारी॥1॥

(नोट–यहाँ शांतिधारा करें।)

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
शांति करो हे शांति ! जिनेश्वर, जगत् शांतिहित नमते गणधर॥2॥
आठों प्रातिहार्य मनहारी, ये जिन वैभव हैं सुखकारी।
तरु अशोक पुष्पों की वर्षा, दिव्य ध्वनि सिंहासन रवि सा॥3॥
छत्र चँवर भामंडल चम–चम, देव–दुंदुभि बजती दुम–दुम।
शांति करो त्रय जग में स्वामी, शीश झुकाता तुमको स्वामी॥4॥

आप अनंत चतुष्टय धारी, मंगल द्रव्य आठ अघहारी।
सर्व विघ्न प्रभु आप नशाओं, हे शांति प्रभु ! शांति दिलाओ॥5॥
पूजक राजा शांति पायें, मुनि तपस्वी शांति पायें।
राष्ट्र नगर में शांति छाये, शांति जगत् में हे जिन ! आये॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(दोनों हाथ में चावल या पुष्प लेकर करबद्ध हो विसर्जन पाठ पढ़ें मंत्र के साथ पुष्पाञ्जलि करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जाने अनजाने हुई, प्रभु पूजा में चूक।
मैं अज्ञान अबोध हूँ, क्षमा करो सब चूक॥1॥
जानूँ नहीं आह्वान मैं, पूजा से अनजान।
ज्ञान विसर्जन का नहीं, क्षमा करो भगवान॥2॥
अक्षर पद और मात्रा, व्यंजनादि सब शब्द।
कम ज्यादा कुछ कह दिया, छूट गये हों शब्द॥3॥
मिथ्या हो सब दोष मम, शरण रखो भगवान।
तव पूजा करके प्रभु, बन जाऊँ भगवान॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः-3जः-3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(9 बार णमोकार का जाप करें।)

(नोट-दीपक लेकर श्रीजी की मंगल आरती करें।)

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : गंध पुष्प प्रभु रज यही, इसको शीश झुकाय।
पुष्प लिये आह्वान के, अपने शीश लगाय॥

(तुभ्यम् नमस्त्रि बोलते हुये भगवान को गुरु को नमस्कार करें।)

***

पद्मावती माता की आरती

(तर्ज - माईन-माईन....)

पार्श्व प्रभु की शासन यक्षी, जय पद्मावती माता।
दीप लिये हम आरती करते, दो भक्तों को साता॥
बोलो पद्मावती की जय, बोलो अंबे माँ की जय...

क्षेत्र आपके मात बहुत से, हुमचा दिल्ली काशी।
धर्मतीर्थ में तुमको पूजें, नर-नारी वनवासी॥
नागयक्ष की आप प्रिया हो-2, भुवन वासिनी माता...दीप..
बोलो पद्मावती की जय...॥1॥

गुप्ति गुरु ने धर्मतीर्थ पे, तुमको मात बिठाया।
अष्ट धातु में चौबीस बाहु, रूप तेरा मन भाया॥
गोद भरें श्रृंगार कराये-2, तुमको ध्यायें माता...दीप...
बोलो पद्मावती की जय....॥2॥

नवरात्रि वा शुक्रवार या, पर्व बड़े जब आयें।
तब दरबार लगा माँ तेरा, भक्ति नृत्य रचायें॥
'आस्था' भाव सहित हर प्राणी-2, तेरे दर पर आता..दीप..
बोलो पद्मावती की जय.... ॥3॥

***

यक्ष-यक्षिणी की आरती

(तर्ज - माईन माईन...)

चौबीस जिन के यक्ष यक्षिणी धर्म प्रभाव बढ़ायें।
घृत कपूर का दीपक ले हम, आरती करने आये॥
बोलो यक्ष-यक्षी की जय-2...॥ घृत...॥

कुसुम श्याम कुमार यक्ष ये, सेवक सब जिनवर के।
गरूड व गोमुख, विजय, वरूण भी, यक्ष हैं ये प्रभुवर के॥
श्री सर्वाण्ह यक्ष धरणेन्द्र-2, सम्यग्दृष्टि कहाये..।
धर्मतीर्थ पर यक्ष-यक्षिणी, प्रभु के साथ बिठाये॥1॥
बोलो यक्ष-यक्षी की जय-2...॥ घृत...॥

शासन देवी है मनोवेगा, ज्वाला मालिनी माता।
गांधारी और महामानसी, चक्रेश्वरी महामाता॥
श्री महाकाली बहुरूपिणी-2, कुष्मांडी मनभाये।
पद्मावती व सर्व देवियाँ, सबके कष्ट मिटायें॥2॥
बोलो यक्ष-यक्षी की जय-2...॥ घृत...॥

विजय वीर मणिभद्र व भैरव, अपराजित यक्षेश्वर।
घंटाकर्ण आदी यक्षों के, जिन प्रभु हैं परमेश्वर॥
क्षेत्रपाल व यक्ष-यक्षिणी-2, समवशरण में जाये।
श्रद्धा से सम्मान करो नित, जिन आगम बतलाये॥3॥
बोलो यक्ष-यक्षी की जय-2...॥ घृत...॥

***

पद्मावती माता का चालीसा

दोहा– पार्श्वनाथ को नमन कर, चौबीस जिन को ध्याय।
नमन पंच परमेष्ठी को, और शारदा माय॥
सब तीर्थों की शान है, पद्मावती जग मात।
उनका चालीसा पढ़ें, दीप धूप के साथ॥

(चौपाई)

जय देवी पद्मावती माता, पार्श्वनाथ की यक्षी माता।
दुःखहरणी सुख करणी माता, घर-घर मंगल करणी माता॥1॥
जिनवर को मस्तक पर धारे, शोभें पारस शीश तुम्हारे।
भुवन लोक में वास तुम्हारा, हर जन-मन में वास तुम्हारा॥2॥
तुमने पार्श्व प्रभु को पूजा, भक्तों ने माँ तुमको पूजा।
जहाँ-जहाँ प्रभु पार्श्व विराजें, वहाँ मात पद्मावती साजे॥3॥
प्रभु ने जब शुचि ध्यान लगाया, वहाँ दुष्ट कमठासुर आया।
उसने अति उपसर्ग रचाया, तुमने वह उपसर्ग मिटाया॥4॥
प्रभु ने जब अर्हत पद पाया, तुमने जिन यक्षी पद पाया।
मुनियों का उपसर्ग मिटाया, सतियों का भी शील बचाया॥5॥
तुमने धर्म ध्वजा फहरायी, जिनशासन की शान बढ़ायी।
तेरी कीर्ति सबने गायी, तू संकट में बने सहायी॥6॥
धर्मतीर्थ में तेरी प्रतिमा, भैरव पद्मावती की महिमा।
अष्ट धातुमय सुन्दर प्रतिमा, सवा सात फीट ऊँची प्रतिमा॥7॥
चौबीस भुजा धारिणी माता, सर्पासन पे बैठी माता।
वाहन कुक्कुट सर्प तुम्हारा, हंसासन कमलासन प्यारा॥8॥
जो माता तेरे दर आये, खाली हाथ कभी ना जाये।
जो सोलह श्रृंगार कराये, चौकी या दरबार लगाये॥9॥
स्वर्णिम वस्त्राभूषण लाये, मेवा फल वा फूल चढ़ाये।
गजरा पुष्पहार पहनाये, छप्पन व्यंजन थाल चढ़ाये॥10॥

गोद भरे नित आरती गाये, तू माँ उसकी गोद भराये।
जो व्रत तेरा करता माता, उसको तू देती सुख साता॥11॥
जो तेरा सम्मान करे माँ, उसका जग में मान बढ़े माँ।
जो निज घर में तुम्हें बिठाये, उसका घर मंदिर बन जाये॥12॥
मंदिर में जो तुम्हें बिठाये, उसका मन मंदिर बन जाये।
पूरी होती सब इच्छायें, धन यश वैभव बढ़ता जाये॥13॥
हुमचा में है तेरी महिमा, लाल किला दिल्ली में गरिमा।
तीर्थ अणिन्दा नागफणी में, गजपंथा मधुवन काशी में॥14॥
अहिक्षेत्र व कुंथुगिरी में, कर्णपुरा कचनेर तीर्थ में।
बाबा नगर व ऋषितीर्थ में, उगार में औ कश्मळगी में॥15॥
चार भुजा चौबीस भुजायें, तेरी इक सौ आठ भुजायें।
उनसे तू माँ कृपा लुटाये, मन मोहक तेरी मुद्रायें॥16॥
सब दुःख संकट हर तू माता, रोग मिटाने वाली माता।
सब विद्या धन लक्ष्मी दाता, ज्योतिष विद्या सिद्धि प्रदाता॥17॥
पुत्र पौत्र कुल संपत् दाता, सब चिंतायें हरती माता।
हे माँ ! धर्म प्रभाव बढ़ाओ, घर-घर से मिथ्यात्व भगाओ॥18॥
पंथवाद को दूर भगाओ, सबको माँ सन्मार्ग दिखाओ।
जैनधर्म का ध्वज फहराओ, जिन महिमा सबको दिखलाओ॥19॥
हम चालीसा तेरा गायें, सुन्दर मनहर वाद्य बजायें।
दीप धूप संग जाप करायें, मन में 'आस्था' भाव बढ़ायें॥20॥

दोहा- पार्श्वनाथ भगवान की, यक्षी देवी मात।
जिनवर को मस्तक धरे, जय पद्मावती मात॥
देवी माँ पद्मावती, भक्तों के मन भाय।
चालीसा हम नित पढ़ें, सब संकट टल जाय॥

जाप्य मंत्र - ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मावती देव्यै नमः स्वाहा।

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

अतिशय क्षेत्र धर्मतीर्थ, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र) द्वारा

आर्ष मार्ष संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य

श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ससंघ का प्रकाशित साहित्य

1. श्री रत्नत्रय आराधना
2. श्री लघु रत्नत्रय आराधना
3. श्री वृहद् रत्नत्रय विधान
4. श्री लघु रत्नत्रय विधान
5. श्री रत्नत्रय भक्ति सरिता
6. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 1)
7. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 2)
8. श्री वृहद गणधर वलय विधान
9. लघु गणधर वलय विधान
10. श्री वृहद नवग्रह शान्ति विधान
11. श्री सूर्यग्रह शान्ति विधान (श्री पद्मप्रभु आराधना)
12. श्री चन्द्रग्रह शान्ति विधान (श्री चन्द्रप्रभु आराधना)
13. श्री मंगलग्रह शान्ति विधान (श्री वासुपूज्य आराधना)
14. श्री बुधग्रह शान्ति विधान (श्री शांतिनाथ आराधना)
15. श्री गुरुग्रह शान्ति विधान (श्री आदिनाथ आराधना)
16. श्री शुक्रग्रह शान्ति विधान (श्री पुष्पदंत आराधना)
17. श्री शनिग्रह शान्ति विधान (श्री मुनिसुव्रतनाथ आराधना)
18. श्री राहूग्रह शान्ति विधान (श्री नेमिनाथ आराधना)
19. श्री केतुग्रह शान्ति विधान (श्री पार्श्वनाथ आराधना)
20. धर्मसूर्य श्री पद्मप्रभ-वासुपूज्य-नेमिनाथ विधान
21. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (बड़ी)
22. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (छोटी)
23. श्री पंचकल्याणक विधान
24. श्री त्रिकाल चौबीसी (लक्ष्मी प्राप्ति) रोट तीज विधान
25. श्री तीस चौबीसी (महालक्ष्मी प्राप्ति) विधान
26. श्री सर्व तीर्थंकर विधान
27. श्री विजय पताका विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री पंच परमेष्ठी (सर्व सिद्धि) विधान
30. श्री विद्या प्राप्ति विधान
31. श्री श्रुत स्कन्ध विधान
32. श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान
33. श्री भक्तामर विधान
34. श्री कल्याण मंदिर विधान
35. श्री एकीभाव विधान
36. श्री विषापहार विधान
37. श्री णमोकार विधान
38. श्री जिन सहस्त्रनाम विधान
39. श्री चौबीस तीर्थंकर, लक्ष्मी प्राप्ति बाहुबली-धर्मतीर्थ एवं आचार्य गुप्तिनंदी विधान

40. श्री चन्द्रप्रभु विधान
41. श्री शान्तिनाथ विधान
42. श्री सर्व दोष प्रायश्चित्त विधान
43. श्री रविव्रत विधान
44. श्री पंचमेरु-दशलक्षण-सोलहकारण विधान
45. श्री नंदीश्वर विधान
46. श्री चन्दन षष्ठी व्रत विधान
47. आचार्य शांतिसागर विधान
48. आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान
49. आचार्य श्री कनकनंदी विधान
50. आचार्य श्री गुप्तिनंदी विधान
51. श्री छ्यानवे क्षेत्रपाल विधान
52. श्री भैरव पद्मावती विधान
53. श्री धर्मतीर्थ आरती संग्रह
54. सावधान (काव्य संग्रह)
55. महासती अंजना
56. कौडियो में राज्य
57. महासती मनोरमा
58. महासती चन्दनबाला
59. विलक्षण ज्ञानी (आचार्य श्री कनकनंदी जी चरित्र कथा)
60. वात्सल्य मूर्ति (गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी स्मारिका)
61. धर्मतीर्थ प्रवेशिका (भाग-1)

सी.डी.

1. श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्र पूजा (सी.डी.)
2. श्री रत्नत्रय आराधना व महाशांति धारा (डी.वी.डी.)
3. श्री नवग्रह शांति चालीसा (सी.डी.)
4. श्री बाहुबली पूजा (सी.डी.)
5. ये नवग्रह शांति विधान है (सी.डी.)
6. गुप्तिनंदी गुणगान (सी.डी.)
7. वात्सल्यमूर्ति माँ राजश्री (डी.वी.डी.)
8. मेरे पारस बाबा (डी.वी.डी,)
9. देहरे के चन्दा बाबा (एम.पी. 3)
10. श्री कुन्थु महिमा (डी.वी.डी.)
11. कनकनंदी गुरुदेव तुम्हारी जय हो (एम.पी.3)
12. गुप्तिनंदी अभिवन्दना (डी.वी.डी.)
13. जयति गुप्तिनंदी डाक्यूमेन्ट्री (डी.वी.डी.) I,II
14. श्री गुप्तिनंदी संघ हिट्स
15. श्री रत्नत्रय जिनार्चना

* * *